श्राद्ध विधि संग्रह

अथवा

पितरोपासना पद्धति

पार्वण श्राद्ध, एकोदिष्ट श्राद्ध
एवं तर्पण विधि सहित

सम्पादक
पं. देव नारायण गौड़ 'दैवज्ञ'

पिता धर्मः पिता कर्मः पिताहि परमं तपः।
पितरः प्रीतिमापन्ने प्रियन्तां सर्वदेवता।।

दैवज्ञ मन्दिर
कानपुर

श्री गणेशाय नमः

श्राद्ध विधि संग्रह

पितरोपासना पद्धति

(एकोदिष्ट श्राद्ध, पार्वणश्राद्ध एवं तर्पण विधि सहित)

पिता धर्मः पिता कर्मः पिताहि परमं तपः। पितरः प्रीतिमापन्ने प्रियन्तां सर्वदेवता।।

सम्पादक

स्व. पं. देव नारायण गौड़ 'दैवज्ञ'

संकलन संयोजक :- पं. विनय कुमार गौड़

दैवज्ञ मन्दिर कानपुर

प्रकाशक :
दैवज्ञ मन्दिर
33/164, गया प्रसाद लेन,
चौक, कानपुर-208001
दूरभाष : 9451396245, 8765190580

प्रथम संस्करण सम्वत 2056
द्वितीय संस्करण सम्वत 2076

मूल्य : 50/-
संवत : 2076
संख्या : 2,000

सोलर प्रेस
कानपुर
9839030542

विषय सूची

卐 卐 卐 卐 卐 卐 卐 卐 卐 卐 卐

श्री गणेशाय नमः

-: ॐ नमो भगवते वासुदेवायः-

पिता धर्मः पिता कर्मः पिताहि परमं तपः। पितरः प्रीतिमापन्ने प्रियन्तां सर्वदेवता।।

श्राद्ध विधि संग्रह

पितरोपासना पद्धति

(एकोदिष्ट श्राद्ध, पार्वणश्राद्ध एवं तर्पण विधि सहित)

दैवज्ञ मन्दिर, कानपुर द्वारा प्रकाशित

सम्पादक

स्मृतिशेष पं. देव नारायण गौड़ 'दैवज्ञ'

३३/१६४, गया प्रसाद लेन, चौक, कानपुर - २०८००१ मोबाइल : ६४५१३६६२४५, ८७६५१६०५८०

Email : devyagmandir@gmail.com

संकलन संयोजक

पं. विनय कुमार गौड़

卐 卐 卐 卐 卐 卐 卐 卐 卐 卐 卐

सामग्री एकोदिष्ट श्राद्ध

तिल, जौ, चावल, रोली, चन्दन
पीली सरसों, गंगाजल
बालू या मिट्टी
पलाश के पत्ते या पत्तले
१५ दोने, सरसों का तेल
११ सिकोरे मिट्टी के
शक्कर, शहद
घी, रूई, दियासलाई
पुष्प, तुलसी
११ फल, धूपबत्ती
१० पान
१० सुपारी
५० ग्रा. कच्चा दूध
२ धोती अंगोछे, २ साड़ी ब्लाउज
३ जनेऊ
पिण्ड निर्माण के लिए
रसोई, खीर या खोया
लौंग, इलायची
यथेच्छ ब्राह्मण भोजन
२ गिलास
कुशा
२ कुशासन
१ सुखासन

सामग्री तर्पण

१ अंगोछा
२ पवित्री
१ मोटक
जल पात्र
१ अर्घा
तिल, जौ, चावल
चंदन, पुष्प आदि

सामग्री पार्वण श्राद्ध

तिल, जौ, चावल,
सरसों का तेल, चंदन, रोली
पुष्प, तुलसी, धूपबत्ती
घी, रूई, माचिस
शक्कर, शहद
पलाश के पत्ते या पत्तल
३० डोने ८ गिलास
१० सिकोरे मिट्टी के
५० ग्राम कच्चा दूध
८ युग्म वस्त्र (धोती अंगोछे)
(साड़ी, ब्लाउज)
८ ब्राह्मणों को देने के लिये वस्त्र
१४ जनेऊ, २० सुपारी
२०, पान, २० फल
लौंग, इलायची
१० ग्राम पीली सरसों
गंगाजल, बालू या मिट्टी
२ धोती अंगोछे (पिण्डों पर चढ़ाने के लिये)
(२ साड़ी, ब्लाउज)
पिण्ड निर्माण के लिए
खीर, रसोई या खोया
बनी हुई बत्तियाँ
४ कुशासन
१ सुखासन

जगतः पितरौ वन्दे पार्वती परमेश्वरौ

पुण्य स्मृति में

साग्निक कर्मकाण्डी

स्व. पं. किशन लाल जी गौड़

एवं

आदरणीया स्व. श्रीमती मूला देवी गौड़

स्मृतिशेष पं. देव नारायण जी गौड़ 'दैवज्ञ'

एवं

स्मृतिशेष सौ. प्रियम्बदा गौड़

के सतत स्मरण हेतु

प्रस्तावना : इस समय श्राद्ध पद्धति को लेकर पण्डितों में विचारों की बहुत ही भिन्नता दृष्टिगोचर होती है। श्राद्ध विषय पर कई आचार्यों ने अपने अपने मत प्रकार किये हैं। जिन विभिन्न मतों के कारण से नये विद्यार्थियों को विषय को समझने में कुछ कठिनाई का सामना करना पड़ता है, क्योंकि पद्धतियों में वही विषय घुमा फिरा लिखने से विषय क्लिष्ट हो जाता है। प्रस्तुत पुस्तक में श्राद्ध जैसे विषय को अधिक सरलतम बनाने का प्रयास किया है, जिससे प्रत्येक विद्यार्थी विषय को एक बार देखकर समझकर कुशलता के साथ विधिवत् श्राद्ध सम्पादन करा सकता है। यदि इससे पण्डित वर्ग को सरलता और सफलता की प्राप्ति होती है तो हम अपना परिश्रम सफल मानेंगे।

इस पुस्तक के प्रकाशन में प्रेस की गड़बड़ी से यदि कोई त्रुटि रह गयी हो तो विज्ञजन उसे सुधारकर हमें बताने की कृपा करें।

भाद्रपद शुक्ल पूर्णमासी सम्वत् 2056 जगत पितरौ वन्दे पार्वती परमैश्वरौ

सम्पादक - पं. देव नारायण गौड़ 'दैवज्ञ'

निवेदन-

पूज्य पिताजी पं. देव नारायण गौड़ 'दैवज्ञ' दिनांक ०६ फरवरी २०१४ को अपना भौतिक शरीर छोड़ कर पंचतत्व में विलीन हो गये। परन्तु उनके द्वारा संकलित कर्मकाण्ड की विविध पुस्तकों के द्वारा वह आज भी हमारे बीच विद्यमान है।

उनके द्वारा संकलित शिर्वाचन की पुस्तक शिव सपर्या पद्धति समस्त शिव भक्तों में बहुत ही लोकप्रिय है। उन्हीं के द्वारा संकलित प्रयोजनीय देवार्चन पद्धति एवं प्रयोजनीय अन्तेष्टि पद्धति भी आर्चायों के बीच बहुत ही लोकप्रिय है।

प्रस्तुत पुस्तक श्राद्ध विधि संग्रह अथवा पितरोपासना पद्धति आज से करीब २० वर्ष पूर्व प्रकाशित हुई थी इसी मांग को देखते हुये इसे पुनः प्रकासित किया जा रहा है। यदि इससे पंण्डित वर्ग को सरलता और सफलता की प्रप्ति होती है तो हम अपना परिश्रम सफल मानेंगे। इस पुस्तक के प्रकाशन में प्रूफ संबंधी यदि कोई त्रुटि रह गई हो तो विज्ञजन उसे सुधार कर हमें बताने की कृपा करें।

पं० विनय कुमार गौड़, संकलन संयोजक दैवज्ञ मंदिर, कानपुर भाद्रपद शुक्ल पूर्णमासी सम्वत् २०७६ विक्रम, दिनांक १४.०६.१६ ईस्वी

।। श्री गणेशाय नमः ।।

श्राद्ध के सम्बन्ध में कुछ ध्यान करने योग्य बातें

१. श्राद्ध में कुतुपकाल दिन में १२ से २ के बीच होता है। दौहित्र, तिल आदि का विशेष महत्व है।

२. श्राद्ध के भोजन में बेसन तथा तेल का प्रयोग बहुमत से वर्जित है।

३. पार्वण श्राद्ध में ब्राह्मण भोजन कराने के बाद ब्राह्मणों से पूछें कि शेष अन्न का क्या करें, किन्तु एकोदिष्ट श्राद्ध में यह विधान नहीं है।

४. श्राद्ध में पिण्डदान के बाद आरती करना निषेध है। बाजे बाजे मन्त्र से तिल छोड़कर पितरों के विसर्जन का विधान है। आरती या बाजा इत्यादि निषेध है। श्राद्ध में उड़द का ग्रहण विशेष रूप से होता है।

५. ब्राह्मण भोजन में स्टील के बजाय मिट्टी के पात्र तथा पत्तलों का प्रयोग श्रेष्ठ है।

६. विश्वेदेवाओं के पूजन में सव्य होकर तथा पितरों के पूजन में अपसव्य होकर करना चाहिए।

श्री गणेशाय नमः

सांकल्पिक श्राद्ध

ॐ अपवित्रः पवित्रे वा सर्वावस्थां गतोऽपिवा ।। यः स्मरेत् पुण्डरीकाक्षं स बाह्याभ्यन्तरशुचिः ।।
ॐ श्राद्धारम्भे गयांध्यात्वा ध्यात्वा देवं गदाधरम् ।स्वान् पितृन मनसा ध्यात्वा ततः श्राद्धं समाचरेत् ।।
ॐ देवतायभ्यः पितृभ्यश्चमहायोगिभ्य एव च ।स्वाहायै च स्वधायै च नित्यमेव नमो नमः ।

तत्रादौ देशकालौ संकीर्त्य अमुक गोत्रः अमुक शर्मा अमुक गोत्रस्य... अस्मत (पिता-माता इत्यादि जो भी हों) अक्षय तृप्ति फल प्राप्तये सांकल्पिक श्राद्ध कर्मामिहं करिष्ये । इसके बाद पंचबलि निकाले । 5 स्थानों पर अन्न रखकर जल छोड़े ।

गौः - सौरभेय्यः सर्वहिताः पवित्राः पुष्यराशयः । प्रतिग्रहण्न्तु में ग्रासं गावस्त्रैलोक्यमातरः ।।
श्वानः- द्वौ श्वानौ श्यामसबलौ वैवस्वतकुलौभ्दभौ । ताभ्यामन्नं प्रयच्छामि स्यातामेता वहिंसकौ ।।
काकः- ऐन्द्रवारूणवायव्या याम्या वै नैऋतास्तथा । वायसाः प्रतिगृणयन्तु भूमौअन्नं मयार्पितम् ।
अतिथिः- अतिथेर्दर्शनं पुण्यं विष्णुमूर्तिविराजते । पितृनुद्दिश्य दीयन्ते पितृदेवो तथार्पणम् ।।
हंतकार :- हंतकारं मयांदत्त पितृणाम् तृप्तिहेतवे । ग्रहाण त्वं कृपा कृत्वा क्षेमायुष्यं करोतुमे ।।
कायेनवाचा मनसेन्द्रियैर्वा बुद्धयाऽऽत्मना वानुसृतस्वभावात् ।करोत यद्दत्सकलं परस्मै नारायणायेति समर्पयेन्तत् ।।
(श्रीमद्भागवत् स्कन्ध 11, अध्याय 2, श्लोक 36) ॐ विष्णवे नमः ॐ विष्णवे नमः ॐ विष्णवे नमः

अथ देव ऋषि पितृ तर्पण

प्रायः करके लोग इस कार्य को पितृपक्ष में करते हैं इसको पानी देना भी कहते हैं यों यह काम नित्य करना चाहिए। नित्य करने वाले तर्पण में यदि घर में करना है तो उसमें तिलों का प्रयोग कहीं कहीं निषेध किया गया है यों तर्पण में तिल, जौ, चावल का प्रयोग करना चाहिए । कर्ता को चाहिए कि जल में खड़ा होकर सूखे वस्त्रों से न करें तथा सूखे स्थान पर बैठकर गीले कपड़े पहनकर न करें ।

कर्ता को चाहिए संध्योपासन आदि से निवृत्त होकर देव ऋषि, पितृ तर्पण करें इसमें दो कुशा को बनी हुई पवित्री दाहिने हाथ में तथा तीन कुशा से बनी पवित्री बायें हाथ में पहने। कुशा के बने हुए मोटक से अपने ऊपर जल का मार्जन करें तथा इस मंत्र को पढ़ें ।

ॐ अपवित्रः पवित्रो वा सर्वावस्थां गतोऽपिवा । यः स्मरेत् पुण्डरीकाक्षं स बाह्याभ्यन्तरशुचिः ।।

इसके बाद हाथ में कुशा, जल, चावल, पुष्प, सुपारी, दक्षिण लेकर संकल्प करें ।

ॐ विष्णुः-3 अद्य नमः परमात्मने श्रीश्वेत वाराहकल्पे जम्बूद्वीपे भरतखण्डे आर्यावर्तैक देशान्तर्गते अमुक पुण्य क्षेत्रे.. तीर्थे अमुक नाम सम्वत्सरे अमुक मासे.. अमुकपक्षे.. अमुक तिथौ ... अमुक वासरे ... अमुक गोत्रः .... अमुक शर्मा देवर्षि पितृतर्पण अहं करिष्ये

इसके बाद पूर्व की ओर मुख करके चावल, पुष्प, चन्दन लेकर उनको मंत्र पढ़कर एक एक अंजलि जल अर्घे से देता जायें।

ॐ ब्रह्मादयोदेवा आगच्छन्तु ग्रहणन्वेताञ्जलांजलीन्। ॐ ब्रह्मातृप्यताम् ॐ विष्णुतृप्यताम् ॐ रूद्रतृप्यताम् ॐ प्रजापतितृप्यताम् ॐ देवास्तृप्यन्ताम् ॐ छन्दांसितृप्यन्ताम् ॐ वेदास्तृप्यन्ताम् ॐ ऋषयस्तृप्यन्ताम् ॐ पुराणाचार्यास्तृप्यन्ताम् ॐ गंधर्वास्तृप्यन्ताम् ॐ इतराचार्यास्तृप्यन्ताम् ॐ संवत्सरास्तृप्यन्ताम् ॐ देव्यस्तृप्यन्ताम् ॐ अप्सरसस्तृप्यन्ताम् ॐ देवानुगास्तृप्यन्ताम् ॐ नागास्तृप्यन्ताम् ॐ पर्वतास्तृप्यन्ताम् ॐ सागरस्तृप्यन्ताम् ॐ सरितस्तृप्यताम् ॐ मनुष्यास्तृप्यन्ताम् ॐ यक्षास्तृप्यन्ताम् ॐ रक्षांसितृप्यन्ताम् ॐ पिशाचास्तृप्यन्ताम् ॐ सुपर्णास्तृप्यन्ताम् ॐ भूतानिस्तृप्यन्ताम् ॐ पशवस्तृप्यन्ताम् ॐ वनस्पतयस्तृप्यन्ताम् ॐ ओषधयस्तृप्यन्ताम् ॐ भूतग्राम चतुर्विधस्तृप्यन्ताम्।। निम्न ऋिषियों को भी पूर्वमुख वैसे ही देववत् जल देवें।

ॐ मरिच्यादिदशऋषयः आगच्छन्तु गृहणन्त्वेताञ्जलांजलीन्। ॐ मरीचिस्तृप्यताम् ॐ अत्रिस्तृप्यताम् ॐ अंगिरास्तृप्यताम् ॐ पुलस्त्यस्तृप्यताम् ॐ पुलहस्तृप्यताम् ॐ क्रतुस्तृप्यताम् ॐ प्रचेतास्तृप्यताम् ॐ वसिष्ठस्तृप्यताम् ॐ भृगुस्तृप्यताम् ॐ नारदस्तृप्यताम्।।

२ जनेऊ अंगोछा कण्ठी के समान करके उत्तर मुँह बैठकर दो दो अंजुली जल कुश और जल से देवें।

ॐ सनकादयः सप्तमुनयः आगच्छन्तु गृहणन्त्वेताञ्जलांजलीन् । ॐ सनकस्तृप्यताम् ॐ सनन्दनस्तृप्यताम् ॐ सनातनस्तृप्यताम् ॐ कपिलस्तृप्यताम् ॐ आसुरिस्तृप्यताम् ॐ बोढुस्तृप्यताम् पंञ्चशिखरतृप्यताम् ।।

अब अपसव्य होकर दक्षिणमुख हो तीन-तीन अंजुली जल तिल सहित इनको भी देवें।

दक्षिणाभिमुखो भूत्वा सतिलैर्द्विगैकुशैः (मोटकैः) पितृतीर्थेन कव्यवाड वान लादयोदिव्यपितर आगच्छन्तु गृहणन्त्वेताञ्जलांजलीन्। ॐ कव्यवाड वस्तृप्यतामिदं तिलोदकंतस्मैस्वधा।।3।। ॐ अनलस्तृप्यतामिदम् तिलोदकंतस्मैस्वधा।।3।। सोमस्तृप्यतामिदम् तिलोदकंतस्मैस्वधा।।3।। ॐ यमस्तृप्यतामिदम् तिलोदकंतस्मैस्वधा।।3।। अर्यमास्तृप्यतामिदम् तिलोदकंतस्मैस्वधा।।3।। अग्निष्वातास्तृप्यन्तामिदं तेभ्यः स्वधा तिलोदकंतस्मैस्वधा।।3।। सोमपाः पितरस्तृप्यन्तामिदम् तिलोदकंतस्मैस्वधा।।3।। बर्हिषदस्तृप्यन्तामिदम् तिलोदकंतस्मैस्वधा।।3।।

बायें घुटने को जाँघ के नीचे दबाकर दक्षिण मुख बैठकर अपसव्य होकर तीन-2 अंजली तिल सहित जल देना चाहिए। 14 यम हैं जैसे नीचे लिखा है।

ॐ यमादि चतुर्दशदेवाआगच्छन्तु गृहणन्त्वेताञ्जलांजलीन् । ॐ यमायनमः ॐ धर्मराजायनमः ॐ मृत्यवेनमः ॐ अन्तकायनमः ॐ वैवस्वतायनमः ॐ कालायनमः ॐ सर्व भूतक्षयाय नमः ॐ औदुम्बरायनमः ॐ दध्नायनमः ॐ नीलायनमः ॐ परमेष्ठिनेनमः ॐ वृकोदरायनमः ॐ चित्रायनमः ॐ चित्रगुप्तायनमः ।।

अब पितरो को मोटककुश सहित तीन-तीन अंजुली जल देवें ।

ॐ अद्यामुक गोत्रः अस्मत पिताः अमुक देवशर्मा वसुस्वरूपाः इदं जलं तस्मै स्वधा ।। 3 ।।

ॐ अद्यामुक गोत्रः अस्मत पितामह अमुक देवशर्मा रूद्रस्वरूपाः इदं जलं तस्मै स्वधा ।। 3 ।।

ॐ अद्यामुक गोत्रः अस्मत प्रपितामहाः अमुक देवशर्मा आदित्य स्वरूपाः इदं जलं तस्मै स्वधा ।। 3 ।।

ॐ अद्यामुक गोत्रः अस्मत माता अमुकी नाम्नी देव्याहः गायत्री स्वरूपाः इदं जलं तस्यै स्वधा ।। 3 ।।

ॐ अद्यामुक गोत्रः अस्मत पितामहि अमुकी नाम्नी देव्याहः सावित्री स्वरूपाः इदं जलं तस्यै स्वधा ।। 3 ।।

ॐ अद्यामुक गोत्रः अस्मत प्रपितामहि अमुकी नाम्नी देव्याहः सरस्वती स्वरूपाः इदं जलं तस्यै स्वधा ।। 3 ।।

इसी प्रकार नाना पक्ष का गोत्र बोलकर करें ।

ॐ अद्यामुक गोत्रः द्वितीयगोत्रस्य अस्मत मातामह अमुक देवशर्मा अग्निस्वरूपः इदं जलं तस्मै स्वधा ।। 3 ।।

ॐ अद्यामुक गोत्रः द्वितीयगोत्रस्य अस्मत प्रमातामह अमुक देवशर्मा

वरूणस्वरूपः इदं जलं तस्मै स्वधा ।। 3 ।।

ॐ अद्यामुक गोत्रः द्वितीयगोत्रस्य अस्मत वृद्धप्रमातामह अमुक देवशर्मा

प्रजापतिस्वरूपः इदं जलं तस्मै स्वधा ।। 3 ।।

ॐ अद्यामुक गोत्रः द्वितीयगोत्रस्य अस्मत मातामहि अमुकी नाम्नी देव्याहः

गंगा स्वरूपा इदं जलं तस्यै स्वधा ।। 3 ।।

ॐ अद्यामुक गोत्रः द्वितीयगोत्रस्य अस्मत प्रमातामहि अमुकी नाम्नी देव्याहः

यमुना स्वरूपा इदं जलं तस्यै स्वधा ।। 3 ।।

ॐ अद्यामुक गोत्रः द्वितीय गोत्रस्य अस्मत वृद्धप्रमातामहि अमुकी नाम्नी देव्याहः

सरस्वती स्वरूपा इदं जलं तस्यै स्वधा ।। 3 ।।

इसके बाद अन्य चाचा, ताऊ, मामा, मामी, भाई-बन्धु, गुरू, श्वसुर, मित्र आदि के लिए भी जल का दान करना चाहिए ।

ॐ देवाऽसुरास्तथा यक्षा-नागा-गन्धर्व-राक्षसाः। पिशाचा गुह्यकाः सिद्धाः कूष्माण्डास्तरवः खगाः।।
जलेचरा भूनिलया वाय्वाधाराश्च जन्तवः।तृप्तिमेते प्रयान्त्वाशु मद्दत्तेनाम्बुनाखिलाः।।
आब्रह्मस्जतअपर्यन्तं देवर्षिपितृमानवाः।तृप्यन्तु पितरः सर्वेमातृमातामहादयः।।

इसके बाद अंगोछे का कोना गीला करके अलग निचोड़ दें। उसके बाद जल तिल लेकर आकाश की तरफ छोड़ें।

येषा पिता न च भ्राता न पुत्रा नैव गोत्रिणाः ते सर्वे तृप्तिमायान्तु मयोत्सृष्टैं कुशोदकैः।

इसके बाद सव्य होकर नीचे लिखे श्लोक से भीष्म पितामह को जलाजंलि दें।

ॐ वैयाघ्र पद गोत्राय सांकृत्य प्रवराय च। अपुत्राय ददाम्येतज्यलभ्भीष्माय वम्मणे।।

फिर नीचे लिखे सूर्य मन्त्र से सूर्य नारायण को अर्घ दें।

एहि सूर्य सहस्रांशो तेजोराशि जगत्पते।अनकम्पय मां भक्तया गृहाणार्घ दिवाकर।।

इसके बाद हाथ जोड़कर प्रार्थना करें।

अनेन कृतेन देवर्षि पितृ तर्पण कर्मणापितृस्परूपी जनार्दनः प्रियताम् न मम।

अथ एकोदिष्ट श्राद्ध विधि

विनायकं गुरूं भानुं ब्रह्मविष्णु महेश्वरान्।।सरस्वतीं प्रणम्यादौ सर्वकार्यार्थ सिद्धये।।
श्राद्धारम्भे गयांध्यात्वा ध्यात्वा देवं गदाधरम् ।स्वान् पितृन मनसा ध्यात्वा ततः श्राद्धं समाचरेत्।।

एकोदिष्ट श्राद्ध का प्रयोग क्षयाह के दिन अथवा मासिक श्राद्ध में होता है। इस श्राद्ध क्रिया में विश्वेदेवा का विधान नहीं है। इसमें ब्राह्मण भोजन की संख्या का भी कोई बन्धन नहीं है। 'क्षयाहे भूरि भोजनम्' कहा गया है। फिर भी एक तीन पाँच आठ ब्राह्मण भोजन कराना उचित है। इस श्राद्ध के बिना पुत्र को पार्वण श्राद्ध का अधिकार नहीं प्राप्त होता है। इसलिए यह श्राद्ध अवश्य करना चाहिए। इसके करने का समय मध्यान्ह काल में होता है। श्राद्धीय पाक सिद्धि के उपरान्त श्राद्धकर्ता एकाग्र होकर श्राद्ध संभार का निरीक्षण करे तथा शुद्ध आसन पर पूर्वाभिमुख होकर बैठे तथा आचमन प्राणायाम् करे :-

ॐ नारायणाय नमः ॐ केशवाय नमः ॐ माधवाय नमः

इसके बाद अपने ऊपर जल छिड़कें।

ॐ अपवित्रः पवित्रो वा सर्वावस्थां गतोऽपिवा।।यः स्मरेत् पुण्डरीकाक्षं स बाह्याभ्यन्तरशुचिः।।

इसके बाद भगवान विष्णु गदाधर का पूजन स्मरण आदि जो संभव हो करें। उसके बाद श्राद्ध कार्य के हेतु दक्षिणाभिमुख होकर अपने पितरों का स्मरण करें :-

श्राद्धारम्भे गयांध्यात्वा ध्वात्वा देवं गदाधरम् ।स्वान् पितॄन् मनसा ध्यात्वा ततः श्राद्धं समाचरेत् ।।
शान्ताकारं भुजगशयनं पद्मनाभं सुरेशम्। विश्वाधारं गगन सदृशं मेघवर्णम् शुभांगम्।
लक्ष्मीकान्तं कमलनयनं योगिभिरध्यान गम्यम्। वन्दे विष्णुं भवभय हरं सर्वलोकैक नाथम।।

ॐ गयायै नमः । ॐ गदाधराय नमः ।।

इसके उपरान्त दाहिने हाथ की अनामिका अंगुली में दो कुशाओं की तथा बायीं अनामिका में तीन कुशाओं की पवित्री धारण करे तथा यह मन्त्र बोलें ।

ॐ पवित्रेस्थो व्वैष्णव्यौ सवितुव्वर्यः प्रसवउत्पुनाम्य छिद्रेण पवित्रेण सूर्य्यस्थ रश्मिभिः ।। तस्य ते पवित्रपते पवित्रपूतस्य यत्कामः पुनेतच्छ्केयम् ।।

इसके बाद दिग्रक्षण करें । एक पत्ते पर पीली सरसों कुशा के तार अथवा चावल लेकर बायें हाथ पर रखे तथा दाहिने हाथ से ढक कर यह मंत्र पढ़े ।

ॐ नमो नमस्ते गोविन्द पुराण पुरूषोत्तम । ।इदं श्राद्धं हृषीकेश रक्ष त्वं सर्वतोदिशः ।।

इसके बाद आगे लिखे मंत्र बोलता हुआ सभी दिशाओं की ओर छोड़ें ।

ॐ प्राच्यै नमः (पूर्व दिशा में) **ॐ अवाच्यै नमः** (दक्षिण दिशा में) **ॐ प्रतीच्यै नमः** (पश्चिम दिशा में) **ॐ उदीच्यै नमः** (उत्तर दिशा में) **ॐ अन्तरिक्षाय: नमः** (आकाश की ओर)

卐 शेष की पुड़िया बनाकर बायीं टेंट में लगा लें। फिर यव पुष्प चन्दनादि पृथ्वी पर 卐
卐 **ॐ श्राद्धभूम्यै नमः ।।** कहता हुआ छोड़े। 卐

卐 एक दीपक घृत का प्रज्वलित करें उसके नीचे चावल रखें एक तेल का दीपक बनायें इसके नीचे तिल रखें। 卐

卐 **भो दीप श्राद्ध साक्षित्वं कर्म विघ्ननिवारक। ।यावत् श्राद्ध समाप्तिस्यात तावत् त्वं स्थिरोभव ।।** 卐

卐 इसके बाद अपने वाम पार्श्व में एक कर्म पात्र की स्थापना करें। उसमें रोली चन्दन अक्षत पुष्प दर्भ 卐
卐 आदि डालकर तीर्थों का आवाहन करें 卐

卐 **ॐ गंगे च यमुने चैव गोदावरि सरस्वती ।नर्मदे सिन्धुकावेरी जलेऽस्मिन् संनिधिं कुरू ।।** 卐

卐 इसके बाद श्राद्ध का संकल्प करें :- 卐

卐 **ॐ विष्णुः-3 अद्योमनमः परमात्मने श्रीश्वेत वाराहकल्पे जम्बूद्वीपे भरत खण्डे बौद्धावतारे 卐
卐 ब्रह्मावर्तैकदेशान्तरर्गते गंगायमुनर्योमध्ये कलियुगे कलिप्रथम चरणे संख्याकं... नाम 卐
卐 सम्वत्सरोऽयम् अमुकायने रविः अमुक ऋतौ मासानाम् मासोत्तमे मासे पक्षे तिथौ वासरान्विता 卐
卐 याम्.. गोत्रः शर्माऽहं गोत्रस्य अस्मत पिता अमुक देवशर्मा वसुस्वरूपः (अस्मत माता अमुकी नाम्नी 卐
卐 देव्याहः) अक्षयतृप्ति फल प्राप्त्यर्थं अमुक श्राद्धान्र्गत एकोदिष्ट श्राद्धकर्माऽहं करिष्ये।** 卐

इसके बाद तीन बाद पितृगायत्री का जप करें।

ॐ देवताभ्यः पितृभ्यश्च महायोगिभ्य एव च।स्वाहायै च स्वाधयै च नित्यमेव नमो नमः।।

इसके बाद **अपसव्य** होकर दाहिने हाथ में जल तिल कुशा का मोटक तथा एक अन्य कुशवट भी लेकर आसन दान का संकल्प बोलें :-

ॐ अद्यामुक गोत्रः अस्मत पिता अमुक देवशर्मा वसुस्वरूपः अमुक श्राद्धार्न्गत एकोदिष्ट श्राद्धे इदमासनम् तस्मै स्वधा।। ॐ अद्यामुक गोत्रः अस्मत माता अमुकी नाम्नी देव्याहः गायत्री स्वरूपः अमुकश्राद्धार्नात इदमासनम् तस्यै स्वधा।। यह कह कर पितृतीर्थ से पितृासन हेतु रखे पत्ते पर छोड़ दें।

ॐ आ यन्तु नः पितरः सोम्यासोग्निष्वा ताःपार्थिभिर्देवयानैः।
अस्मिन् यज्ञे स्वधयामदन्तोधि ब्रुवन्तु तेवन्त्वस्म्मान्।।

इस प्रकार पितरों का आवाहन करें तथा आये हुए पिता-माता को प्रणाम करें। इसके बाद अर्घ दें। आसन तथा भोजन पात्र के सामने एक दोना रखें तथा उसमें जल भरें।

ॐ शन्नोदेवी रभिष्टय आपो भवन्तुपीतये। शंय्योरभिश्रवन्तुनः।। इसके बाद उसमें कुशा की पवित्री छोड़ें।

ॐ पवित्रेस्थो व्वैष्णव्यौ सवितुर्व्वः प्रसवउत्पुनाम्य छिद्रेण पवित्रेण सूर्य्यस्य रश्मिभिः।।

तस्य ते पवित्रपते पवित्रपूतस्य यत्कामः पुनेतच्छ्केयम् ।।

इसके बाद उस पात्र में तिल छोड़े

ॐ तिलोसि सोमदैवत्यो गोसवो देवनिर्मितः । प्रत्नमदिः पृक्तः स्वधया पितॄन्लोकान् प्रीणाहि नः स्वधा ।।

रोली,चन्दन पुष्पादि मौन होकर छोड़े इसके बाद अर्घपात्र उठाकर बायें हाथ पर रखें । उसकी पवित्री निकाल कर सामने भोजनपात्र पर रखें । उस पर कर्मपात्र के जल से प्रोक्षण करें । अर्घपात्र पर दाहिना हाथ उल्टा करके ढक लें तथा यह मन्त्र पढ़े ।

ॐ या दिव्या आपः पयसा संबभुवुर्या अंतरिक्षा उत्पार्थिवीर्या हिरण्यवर्णा यज्ञियास्ता न आपः शिवाः सꣳस्योनाः सुहवा भवन्तु ।।

इसके बाद अर्घपात्र को दाहिने हाथ पर रखकर संकल्प करें ।

ॐ अद्यामुक गोत्रः अस्मत पिता अमुक देवशर्मा वसुस्वरूपः अमुकश्राद्धार्न्गत एकोदिष्ट श्राद्धे एष हस्तार्घ तस्मै स्वधा ।। ॐ अद्यामुक गोत्रः अस्मत माता अमुकी नाम्नी देव्याहः गायत्री स्वरूपः अमुक श्राद्धार्न्गत एष हस्तार्घ तस्यै स्वधा ।।

यह कहकर पितृतीर्थ से कुशवट पर छोड़ दें । उसमें पुष्पादि भी चढ़ा दें । पवित्री पुनः उठाकर उसी अर्घपात्र में रख दें तथा उस पर जल का मार्जन करें । फिर उसे ऊपर की ओर उल्टा करके रख दें । आगे

दक्षिणादान तक उसका स्पर्श न करें तथा कुशवट पर स्नान, चन्दन, तिल, वस्त्र, यज्ञोपवीत, धूप, दीप, ऋतुफल, पान, सुपारी, लौंग, इलायची आदि श्रद्धा सहित अर्पण करें तथा संकल्प करें।

ॐ अद्यामुक गोत्रस्य... अस्मत पिता अमुक देवशर्मा वसुस्वरूप सपत्नीकः अमुक श्राद्धान्र्गत एकोदिष्ट श्राद्धे एतानि स्नान गन्ध पुष्प तिल धूपदीप ऋतुफल सफल ताम्बूल यज्ञोपवीतवासांसि तस्मै स्वधा।

ॐ अद्यामुक गोत्रस्य... अस्मत माता अमुकी नाम्नी देव्याहः गायत्रीस्वरूपः अमुक श्राद्धान्र्गत एकोदिष्ट श्राद्धे एतानि स्नान गन्ध पुष्प तिल धूपदीप ऋतुफल सफल ताम्बूल वासांसि तस्यै स्वधा।

फिर हाथ जोड़कर प्रार्थना करें।

अन्नहीनं क्रियाहीनं विधिहीनं यत्कृतं तत्सर्व अछिद्रं अस्तु।।

इसके बाद दाहिने हाथ में जल लेकर अंगूठे के बल चारों ओर छोड़ता हुआ कहें :-

ॐ यथा चक्रायुधोविष्णुः त्रयैलोक्यं परिरक्षति।। एवं मण्डल तो येन सर्वभूतानि रक्षतु।।

एक पत्ते पर कुछ अन्न एवं तिल रखकर एक ओर रख कर कहें :-

इदमन्नं एतद्भूस्वामि पितृभ्यो स्वधा

फिर श्राद्ध की रसोई भोजन पात्र पर **सव्य** होकर धीरे-धीरे परोसे उसके बाद तर्जनी अंगुली से **अपसव्य** होकर उस पात्र पर शहद लगायें ।

ॐ मधुव्वाताऋतायते मधुक्षरन्ति सिन्धवः माध्वीनः सन्त्वोषधीः ।। मधुनक्तमुतोषसो मधुमत्तपार्थिवᳬ रजः ।। मधुद्यौरस्तु न पिता मधुमान्नो व्वनस्पतिम्मधु 2ऽ अस्तुसूर्य्यः माध्वीर्गावो भवन्तु नः ।। ॐ मधु, मधु, मधु

इसके बायीं ओर एक पात्र में घृत रक्खे तथा यह मन्त्र पढ़ेः-

ॐ घृतं घृतपावानः पिवतवसां वसापावानः पिवतान्तरिक्ष हविरसि स्वाहा ।। दिशः प्रदिशऽ आदिशो व्विदिसिऽउद्दिदभ्यः स्वाहा ।।

फिर सामने एक जल पूरित पात्र रखकर व्युत्क्रम से अंगुलियों का अग्रभाग पृथ्वी पर टिकाकर इन मन्त्रों को बोलें :-

ॐ पृथ्वी ते पात्रं द्यौरपिधानम् ब्राह्मणस्य मुखे अमृते अमृतं जुहोमि स्वाहा ।। ॐ कृष्णकव्यरक्ष मदीयम् ।। ॐ इदं विष्णुर्विचक्रमे त्रेधा निदधे पदम् ।। समुढमस्यपाᳬ सुरेस्वाहा

इसके बाद दाहिने हाथ का अंगूठा क्रमशः अन्न जल एवं घृत पर स्पर्श करावे -ः

इदमन्नं इमाआपः इदंआज्यं इदंकविः ।।

कहकर अन्न पर थोड़े तिल छोड़े तथा कहें :- **अपहता असुरारक्षा ॐ सिवेदिषत् ।।**

फिर हाथ में जल कुशा तिल लेकर संकल्प करें ।

ॐ अद्यामुक गोत्राः.. अस्मत पिता अमुक देवशर्मा वसुस्वरूपः सपत्नीकः अमुक श्राद्धार्न्गत एकोदिष्ट श्राद्धे एतद् वो अन्नं परिवेष करन्नं घृताद्युपस्कर सहितं परिवेश्यम् परिवेषमानं अमृतरूपं ब्राह्मण भोजन तृप्तिक्षमं वो नमः ।। ॐ अद्यामुक गोत्राः.. अस्मत माता अमुकी नाम्नी देव्याहः गायत्री स्वरूपः अमुक श्राद्धार्न्गत एकोदिष्ट श्राद्धे एतद् वो अन्नं परिवेष करन्नं घृताद्युपस्कर सहितं परिवेश्यम् परिवेषमानं अमृतरूपं ब्राह्मण भोजन तृप्तिक्षमं वो नमः ।।

इसके बाद अग्निकोण में एक कुशा बिछा दें । उस पर आगे लिखा मन्त्र बोलकर जल तिल छोड़ें

ॐ असंस्कृत प्रणीतानाम् त्यागिनां कुल योषिताम् ।उच्छिष्ट भागमादेयम् दर्भेषु विकिरासनम् ।।

इसके बाद एक पत्ते पर कुछ अन्न रखकर उस पर औंधा दें और यह मन्त्र पढ़ेः-

ॐ अग्निदग्धा ये जीवा ये प्रदग्धाः कुले मम । भूमौ दत्तेन तृत्यन्तु तृप्ता यान्तु परां गतिम् ।।

इसके बाद सव्य होकर पितृगायत्री तीन बार पढ़े तथा भगवान विष्णु का स्मरण करें । कुछ लोग यहाँ

पवित्री त्याग कर दूसरी पवित्री धारण करते हैं । यह आवश्यक नहीं है । यहि करते हैं तो उनकी इच्छा पर है । फिर अपसव्य होकर पायस, खीर, खोया, रसोई आदि से पिण्ड बनायें । पिण्ड निर्माण में तिल, मधु, घृत, शक्कर, पय मिश्रण करके विल्व फल के आकार का बनायें तथा कुछ भाग शेष छोड़ दें । पिण्ड में नमकीन वस्तु न मिलायें । फिर पिण्ड दान के लिए बालू या मिट्टी से दक्षिण के ढाल वाली प्रादेश प्रमाण की बनायें । जल से उस पर प्रोक्षण करें :-

अयोध्या मथुरा माया काशीकांचीह्यवन्तिका । पुरी द्वारवतीज्ञेया सप्तैताः मोक्षदायिकाः ।।

इसके बाद तिनके को जलाकर वेदी पर घुमाये

ॐ ये रूपाणि प्रतिमुन्चमाना असुराः सन्तः स्वधया चरन्ति ।
परा पुरो निपुरो ये भरन्त्यग्निष्टाँ ल्लोकान्प्रणुदात्वस्मात् ।।

इसके बाद जड़ रहित तीन कुशा दक्षिणाग्र वेदी पर विछायें एक दोने में जल, चन्दन, पुष्प, तिल आदि रखकर दाहिने हाथ में उठा लें तथा अवनेजन का संकल्प बोल कर कुशाओं पर अंगूठे से छोड़े :-

ॐ अद्यामुक गोत्राः.. अस्मत पिता अमुक देवशर्मा वसुस्वरूपः सपत्नीकः अमुक श्राद्धार्न्गत एकोदिष्ट श्राद्धे पिण्डस्थाने अत्रावने निक्ष्व तस्मै स्वधा ।। ॐ अद्यामुक गोत्राः.. अस्मत माता अमुकी नाम्नी देव्याहः गायत्री स्वरूपः अमुक श्राद्धार्न्गत एकोदिष्ट श्राद्धे पिण्डस्थाने अत्रावने निक्ष्व तस्यै स्वधा ।।

उस पात्र का कुछ जल कुशाओं पर छोड़े तथा पात्र को वेदी के सामने रखें तथा पिण्डदान करें । यदि

धर्मपत्नी श्राद्ध कार्य में सहयेग कर रही हो तो पिण्ड लेकर पति के दाहिने हाथ पर रखें अथवा स्वयं लेकर हाथ पर रखकर उस पर तिल जल छोड़े ।

ॐ अद्यामुक गोत्राः.. अस्मत पिता अमुक देवशर्मा वसुस्वरूपः सपत्नीकः अमुक श्राद्धार्न्गत एकोदिष्ट श्राद्धे एष सान्नोदक पिण्ड पयतिलमधुघृत सहितं तस्मै स्वधा ।

ॐ अद्यामुक गोत्राः.. अस्मत माता अमुकी नाम्नी देव्याहः गायत्री स्वरूपः अमुक श्राद्धार्न्गत एकोदिष्ट श्राद्धे एष सान्नोदक पिण्ड पयतिलमधुघृत सहितं तस्यै स्वधा ।

यह करके पिण्ड को अंगूठे की ओर से वेदी पर रखें । **नीवी खोल दें** । इसके बाद बांयी ओर मुख करके पिता के स्वरूप का ध्यान करता हुआ श्वासं खींचे तथा पिण्ड पर छोड़ दें । इस मंत्र को पढ़ें :-

ॐ अत्र पितरो मादयध्वं यथाभागमावृषायध्वम् । ॐ अमीमदंत पितरो यथाभागमावृषायिषत ।

फिर अवनेजन वाला पात्र दाहिने हाथ पर रखकर बोले

ॐ अद्यामुक गोत्राः.. अस्मत पिता अमुक देवशर्मा वसुस्वरूपः सपत्नीकः अमुक श्राद्धार्न्गत एकोदिष्ट श्राद्धे प्रत्यवनेनिक्ष्व निक्ष्व तस्मै स्वधा ।। ॐ अद्यामुक गोत्राः.. अस्मत माता अमुकी नाम्नी देव्याहः गायत्री स्वरूपः अमुक श्राद्धार्न्गत एकोदिष्ट श्राद्धे प्रत्यवनेनिक्ष्व निक्ष्व तस्यै स्वधा ।।

इसके बाद पिण्ड पर वस्त्र चढ़ावे । वस्त्र के अभाव में केवल सूत्र भी चढ़ा सकते हैं । यज्ञोपवीत भी

चढ़ावे तथा आगे लिखे मन्त्र को बोलें।

ॐ नमो वः पितरो रसाय नमो वः पितरः शोषाय नमो वः पितरोजीवाय नमो वः पितरः स्वधायै नमो वः पितरो घोराय नमो वः पितरो मन्यवे नमो वः पितरः पितरो नमो वो गृहान्नः पितरो दत्त सतोवः पितरोदेव्मैतद्वः पितरो पितरोवासऽआधृन्त ।।

फिर हाथ में तिल जल लेकर वस्त्र दान का संकल्प करें।

ॐ अद्यामुक गोत्राः अस्मत पिता अमुक देवशर्मा वसुस्वरूपः सपत्नीकः अमुक श्राद्धार्न्गत एकोदिष्ट श्राद्धे शीतातपनिवारणार्थ पिण्डोपरि एतत वासांसि तस्मै स्वधा। ॐ अद्यामुक गोत्राः अस्मत माता अमुकी नाम्नी देव्याहः गायत्री स्वरूपः अमुक श्राद्धार्न्गत एकोदिष्ट श्राद्धे शीतातपनिवारणार्थ पिण्डोपरि एतत वासांसि तस्यै स्वधा।

फिर पिण्ड पर रोली चन्दन, तिल, पुष्प, धूप दीप नैवेद्य आचमन, ऋतुफल पान सुपारी, लौंग, इलायची, दक्षिणा आदि चढ़ावें।

ॐ अद्यामुक गोत्राः अस्मत पिता अमुक देवशर्मा वसुस्वरूपः सपत्नीकः अमुक श्राद्धार्न्गत एकोदिष्ट श्राद्धे पिण्डोपरि गन्धाद्यर्चनं तस्मै स्वधा।

ॐ अद्यामुक गोत्राः अस्मत माता अमुकी नाम्नी देव्याहः गायत्री स्वरूपः अमुक श्राद्धार्न्गत एकोदिष्ट श्राद्धे पिण्डोपरि गन्धाद्यर्चनं तस्यै स्वधा ।

इसके बाद **सव्य** होगर पिण्डपर पूर्वाग्र जल धारा दें ।

ॐ अघोराः पितरः सन्तु ।। ॐ अघोराः मातराः सन्तु ।।

फिर अंजलि बांधकर आशीर्वाद मांगे ।

ॐ गोत्रं नो वर्धताम् । दातारो नोऽभि वर्धन्ताम् । वेदाः सन्तति रेव च । श्रद्धा च नो माव्यगमद बहु देयं च नोऽस्तु । अन्नं च नो बहुभवेद् । अतिथिश्च लभेमहि । याचिताश्च नः सन्तु । माच याचिष्म कश्चन । एताः सत्याशिषः सन्तु

इसके बाद **अपसव्य** होकर अंगूठे से पिण्डों पर दूध चढ़ावें । यह मन्त्र पढ़ें :-

ॐ उर्ज्ज बहान्तिरमृतं घृतं पयः कीलालं परिस्त्रुतम् । स्वधास्वथ तर्पयत् में पितृन् ।।

इसके बाद पिण्ड के नीचे की कुशा दक्षिण से खींच कर अग्नि में डाल दें **पिण्डाधारान कुशां संचालयेत** तथा रक्षा दीप विसर्जन कर दें इसके बाद हाथ पैर धोकर पुनः आसन पर बैठ जायें । फिर कुशवट (पित्रासन) पर नीचे लिखे मन्त्रों को बोल कर चढ़ावें । **ॐ शिवाः आपः सन्तु (जल का छींटा दें) ॐ गन्धाः पान्तु (रोली चन्दन लगावें) ॐ अक्षतंचारिष्टंचास्तु (तिल चढ़ावें) ॐ पुष्पाणि पान्तु (पुष्प चढ़ावे)**

फिर हाथ में जल लेकर संकल्प करें ।

ॐ अद्यामुक गोत्राः अस्मत पिता अमुक देवशर्मा वसुस्वरूपः सपत्नीकः अमुक श्राद्धार्न्तत एकोदिष्ट श्राद्धे कृतैकृत अन्न पानादिकं अक्षय्यमस्तु ।

ॐ अद्यामुक गोत्राः अस्मत माता अमुकी नाम्नी देव्याहः गायत्री स्वरूपः अमुक श्राद्धार्न्तत एकोदिष्ट श्राद्धे कृतैकृत अन्न पानादिकं अक्षय्यमस्तु ।

इसके बाद नीचे झुक कर पिण्डों को सूंघें । पिण्ड को सिर दक्षिण स्कंध तथा हृदय से लगायें और कहें

में पितुः स्वर्गेवासः में मातुः स्वर्गेवासः

फिर सव्य होकर तीन बार पितृगायत्री का स्मरण करें तथा विष्णुभगवान का स्मरण करके पुनः अपसव्य हो जायें । इसके बाद **अर्घपात्र को सीधा कर दें** तथा हाथ में द्रव्य लेकर दक्षिणा दान का संकल्प करें ।

ॐ अद्यामुक गोत्राः अस्मत पिता अमुक देवशर्माः वसुस्वरूपः सपत्नीकः अमुक श्राद्धार्न्तत एकोदिष्ट श्राद्धे हस्त ग्रहीतं रजतं चन्द्रदैवतम् श्राद्ध प्रतिष्ठा सिद्धयर्थ यथानामगोत्राय ब्राह्मणाय दातुं अहम् उत्सृजे ।

ॐ अद्यामुक गोत्राः अस्मत माता अमुकी नाम्नी देव्याहः गायत्री स्वरूपः अमुक श्राद्धार्न्तत एकोदिष्ट श्राद्धे हस्त ग्रहीतं रजतं चन्द्रदैवतम् श्राद्ध प्रतिष्ठा सिद्धयर्थ यथानामगोत्राय ब्राह्मणाय दातुं अहम् उत्सृजे ।

इसके बाद तिल छोड़ता हुआ विसर्जन करें ।

ॐ व्याजे व्याजे वत बाजिनो धनेषु विप्राऽअमृता ऋतज्ञा ।
अस्य मध्वः पिवतमादयध्वं तृप्ता यातु पार्थिभिर्देवयानैः ।।

फिर सव्य होकर भगवान विष्णु का स्मरण करें ।

ॐ यस्य स्मृत्या च नामोक्त्या तपोयज्ञक्रियादिषुन्यूनं सम्पूर्णतां यातु सद्यो वन्दे तमच्युतम् ।।
प्रमादात् कुर्वताम्कर्म प्रच्वेताध्वरेषु यत् । स्मरणा देवतद्विष्णोः सम्पूर्णताम् स्यादितिश्रृतिः

इसके बाद आचार्य दक्षिणा का संकल्प करें ।

ॐ अद्यामुक गोत्राः शर्माऽहं कृतैकृत अमुक श्राद्धान्र्गत एकोदिष्ट श्राद्धे प्रतिष्ठा सिद्धयर्थं हस्तग्रहीतं मनसा कल्पितं द्रव्यं रजतं चन्द्रदैवतम् अमुक गोत्राय यथानाम्... आचार्याय तुभ्य महं सम्प्रददे ।
ॐ विष्णवे नमः ! विष्णवे नमः ! विष्णवे नमः !

।। ॐ गदाधराय नमः ।।

गोदान

ॐ देशकालौ संकीर्त्य गोत्रः अमुक नाम शर्माहं अस्मत पिता अमुक देवशर्माः वसुस्वरूपः सपत्नीकः अमुक श्राद्धान्र्गत एकोदिष्ट श्राद्धे गोलोकवास फलावाप्तये हस्त ग्रहीतं द्रव्यं गो निष्क्रिय भूतं न्यूनातिरिक्तदोष परिहार्थं रजतं चन्द्रदैवतम् यथानामगोत्राय ब्राह्मणाय दातुं अहम् मुप्सृजे श्रीकृष्णापर्णं अस्तु ।

अन्नदान

ॐ देशकालौ संकीर्त्य गोत्रः अमुक नाम शर्माहं अस्मत पिता अमुक देवशर्माः वसुस्वरूपः सपत्नीकः अमुक श्राद्धान्र्गत एकोदिष्ट श्राद्धे परलोके महाक्षुधा दूरी करणार्थं श्री विष्णु दैवतं प्रीत्यर्थं आमान्न दान निष्क्रिय भूतं अमुक गोत्रः अमुक शर्माणं दातुं अहम् मुप्सृजे श्रीकृष्णापर्णं अस्तु ।

शैयादान

ॐ देशकालौ संकीर्त्य गोत्रः अमुक नाम शर्माहं अस्मत पिता अमुक देवशर्माः वसुस्वरूपः सपत्नीकः अमुक श्राद्धान्र्गत एकोदिष्ट श्राद्धे परलोके सुख शयनार्थं इमां शैयां सालंकारां सोपस्कर सहितां मनसः कल्पितं द्रव्यादियुताम अमुक गोत्रः अमुक शर्माणं त्वां महं वृणे श्रीकृष्णापर्णं अस्तु ।

अपात्रक पार्वण श्राद्ध

।। श्री गणेशाय नमः ।।

।। श्री गणेशाय नमः ।।

अपात्रक पार्वण श्राद्ध

ॐ गुरुर्ब्रह्मा गुरूर्विष्णुः गुरूर्देवो महेश्वरः। गुरुर्साक्षात् परब्रह्म तस्मै श्री गुरुवेनमः।।

श्राद्धारम्भे गयांध्यात्वा ध्वात्वा देवं गदाधरम्। स्वान् पितृन् मनसा ध्यात्वा ततः श्राद्धं समाचरेत्।।

यह श्राद्ध पर्व काल जैसे अमावस्या पितृपक्ष आदि में होता है। इसीलिए इसे पार्वण श्राद्ध कहते हैं। यह दो प्रकार का होता है। पहला पात्रक श्राद्ध तथा दूसरा अपात्रक श्राद्ध होता है। अपात्रक श्राद्ध में पितरों का आहन कुशाओं से बने मोटक पर किया जाता है तथा उसी का पूजन अर्चन श्राद्ध विधि से किया जाता है। पात्रक श्राद्ध में उन स्थानों पर ब्राह्मण बैठाकर उनके शरीर में पितरों का आवाहन किया जाता है। इसमें श्राद्ध का बड़ा स्थान एवं सम्भार भी विशेष होता है। इसलिए इस समय प्रायः सभी लोग अपात्रक श्राद्ध ही करते हैं। इस पुस्तक में अपात्रक पार्वण श्राद्ध की विस्तृत एवं संक्षिप्त दोनों विधियाँ लिखी है। देशकाल की व्यवस्था के अनुसार कार्य का सम्पादन कराना चाहिए। इसके लिए पहले लिखे श्राद्ध देश में चार आसन बिछाले। एक आचार्य का, दूसरा सहयोगी ब्राह्मण का तथा दो यजमान के लिए। यदि धर्मपत्नी श्राद्ध

सहयोगिनी हो तो उनके लिए यजमान के दाहिनी ओर एक आसन और लगावें। श्राद्ध की सामग्री पाक (रसोई) आदि का निरीक्षण कर लें। दो शुद्ध वस्त्र यज्ञोपवीत शिखा बन्धन तिलक आदि से निवृत्त होकर अपने आसन पर पूर्वाभिमुख बैठ जाएँ। तीन बार आचमन प्राणायाम करें।

ॐ नारायणाय नमः ॐ केशवाय नमः ॐ माधवाय नमः

इसके बाद अपने ऊपर जल छिड़कें।

ॐ अपवित्रः पवित्रो वा सर्वावस्थां गतोऽपिवा। यः स्मरेत् पुण्डरीकाक्षं स बाह्याभ्यन्तरशुचिः।

इसके बाद शालिग्रामस्वरूपी भगवान का पूजन स्मरण आदि यथा साध्य करें। फिर श्राद्ध का कार्य करने के लिए दक्षिण को मुख कर लें। दाहिने हाथ की अनामिका में दो कुशा की तथा बायें हाथ में तीन कुशाओं की पवित्री धारण करें। एक कुशा आसन के नीचे, एक यज्ञोपवीत में तथा एक शिखा में लगायें।

द्वे दर्भेदक्षिणेहस्ते सव्येत्रीणि कुशानि च पादमूले शिखायामूतु सकृत् यज्ञोपवीतके।

ॐ पवित्रेस्थो व्वैष्णव्यौ सवितुर्व्वः प्रसवउत्पुनाम्य छिद्रेण पवित्रेण सूर्य्यस्य रश्मिभिः।। तस्य ते पवित्रपते पवित्रपूतस्य यत्कामः पुनेतच्छ्केयम्।।

फिर हाथ जोड़े :-

ॐ श्राद्धारम्भे गयांध्यात्वा ध्यात्वा देवं गदाधरम् ।
स्वान् पितॄन् मनसा ध्यात्वा ततः श्राद्ध समाचरेत् ।।

-: नीवी बन्धन :-

एक पत्ते या पान पर पीली सरसों या चावल तथा कुशा के कुश रखकर बायें हाथ पर रखें तथा दाहिने हाथ से ढक कर यह मन्त्र बोलें :-

ॐ नमो नमस्ते गोविन्द पुराण पुरूषोत्तम ।। इदं श्राद्धं हृषीकेश रक्ष त्वं सर्वतोदिशः ।।

फिर दाहिने हाथ से थोड़ी-2 सरसों मन्त्र से चारों ओर छोड़े।

ॐ प्राच्यै नमः (पूर्व दिशा में) ॐ अवाच्यै नमः (दक्षिण दिशा में)
ॐ प्रतीच्यै नमः (पश्चिम दिशा में) ॐ उदीच्यै नमः (उत्तर दिशा में)
ॐ अन्तरिक्षाय नमः (आकाश की ओर)

शेष को पुड़िया बनाकर बायीं टेंट में लगा लें। फिर यव पुष्प चन्दनादि पृथ्वी पर छोड़ें।

ॐ **श्राद्धभूम्यै नमः।।** कहता हुआ छोड़े। फिर अपने बायीं ओर एक जल पात्र की स्थापना करें।

ॐ गंगादिसर्वतीर्थेभ्योनमः। ॐ फल्गूदैव्यैनमः।।

इसके बाद बायीं ओर एक जल पूरित पात्र में चन्दन अक्षत पुष्पादि लेकर तीर्थो का आवाहन करें।

ॐ गंगे च यमुने चैव गोदावरि सरस्वती। नर्मदे सिन्धुकावेरी जलेऽस्मिन् संनिधिं कुरू।।

यह कह कर उसमें चन्दन अक्षत पुष्पादि छोड़े। उसके जल से अपना तथा सामग्री का प्रोक्षण करें।

ॐ अपवित्रः पवित्रो वासर्वावस्थां गतोऽपिवा।यः स्मरेत्पुण्डरीकाक्षंसबाह्याभ्यन्तरः शुचिः।

एक घी का दीपक प्रज्वलित करें इसके नीचे चावल रखें

इसके बाद एक तेल के दीपक को प्रज्वलित करें इसके नीचे काले तिल रखें और कहें:-

भो दीप श्राद्ध साक्षित्वं कर्म विघ्ननिवारक।।
यावत् विर्धायतेश्राद्धं तावत् त्वं स्थिरोभव।।

।। ॐ फल्गूदेव्यै नमः ।।

फिर हाथ में जल अक्षत पुष्प कुशा सुपारी द्रव्य लेकर पार्वण श्राद्ध का संकल्प बोले :-

ॐ विष्णुः-3 देश कालौ संकीर्त्य.. गोत्र.. शर्माहं अमुक श्राद्धान्र्गत महालयान्र्गत गोत्रस्य अस्मत पितृ पितामह प्रपितामहानाम् अमुकामुक देव शर्मणाम् वसुरूद्रादित्य स्वरूपानाम् यथा संभव सपत्नीकानाम् तथा च द्वितीयगोत्रस्यः... मातामह प्रमातामह वृद्धप्रमातामहानाम अमुकामुक देवशर्माणाम अग्निव्वरूण प्रजापति स्वरूपानाम् यथासंभव सपत्नीकानाम् (अमावस्यायाम् महालयान्र्गत, पंक्तिमिलन श्राद्धान्र्गत) अपात्रक श्राद्ध विधिना पार्वण श्राद्ध महं करिष्ये ।

ॐ विष्णुः-3 देश कालौ संकीर्त्य.. गोत्रा.. शर्माहं अमुक पर्वणि ... गोत्रस्य अस्मत माता पितामहि प्रपितामहि अमुकी अमुकी नाम्नी देव्याहः गायत्री सावित्री सरस्वती स्वरूपः तथा च द्वितीयगोत्रस्यः... मातामहि प्रमातामहि वृद्धप्रमातामहि अमुकी अमुकी नाम्नी देव्याहः गंगा यमुना सरस्वती स्वरूपः (अमावस्यायाम् महालयान्तर्नात, पंक्तिमिलन श्राद्धान्र्गत) अपात्रक श्राद्ध विधिना पार्वण श्राद्ध महं करिष्ये ।

फिर **सव्य** होकर पितृगायत्री का तीन बार जप करें ।

ॐ देवतायभ्यः पित्भ्यश्चमहायोगिभ्य एव च ।स्वाहायै च स्वधायै च नित्यमेवनमोनमः ।

卐 यह कार्य आसन नं. 1 से करने के बाद आप आसन नं. 1 से करने के बाद आप आसन नं. 3 पर पश्चिमाभिमुख होकर बैठें। यहाँ पार्वण से सम्बन्ध रखने वाले विश्वेदेवाओं का पूजन करें। सामने दो आसन दक्षिण उत्तर क्रम से लगे हैं। दक्षिण की ओर का आसन पितृ पक्ष के तथा उत्तर का आसन मातामह पक्ष के विश्वेदेवाओं का है। इसके लिए हाथ में जौ, कुशा जल लेकर आसन दान का संकल्प बोलें

ॐ अद्यामुक गोत्राः.. अस्मत पितृ पितामह प्रपितामह अमुकामुक देवशर्माणं वसुरूद्रादित्य स्वरूपानाम यथासंभव सपत्नीकानां महालयार्न्गत (पंक्ति मिलन) अपात्रक पार्वण श्राद्धे आर्द्रव पुरूरव संज्ञक श्राद्ध सम्बन्धिनो विश्वे देवा इदमासनं वो नमः।। ॐ अद्यामुक गोत्राः.. अस्मत माता पितामहि प्रपितामहि अमुकी अमुकी नाम्नी देव्याहः गायत्री सावित्री सरस्वती स्वरूपः महालयार्न्गत (पंक्ति मिलन) अपात्रक पार्वण श्राद्धे आर्द्रव पुरूरव संज्ञक श्राद्ध सम्बन्धिनो विश्वे देवा इदमासनं वो नमः।।

इसी प्रकार मातामह आदि के लिए संकल्प करें। पुरूरव, आर्द्रव

ॐ अद्यामुक गोत्राः द्वितीय गोत्रस्य... अस्मत मातामह प्रमातामह वृद्धप्रमातामहाः अमुकामुक देवशर्माणं अग्निव्वरूण प्रजापतिस्वरूपानाम यथा संभव सपत्नीकाः महालयार्न्गत (पंक्ति मिलन) अपात्रक पार्वण श्राद्धे आर्द्रव पुरूरव संज्ञक श्राद्ध सम्बधिनो विश्वे देवा इदमासनं वो नमः।। ॐ अद्यामुक गोत्राः द्वितीय गोत्रस्य... अस्मत मातामहि प्रमातामहि वृद्धप्रमातामहि अमुकी अमुकी नाम्नी देव्याहः गंगा

卐 यमुना सरस्वती स्वरूपानाम (पंक्ति मिलन) अपात्रक पार्वण श्राद्धे आर्द्रव पुरूरव संज्ञक श्राद्ध सम्बधिनो विश्वे देवा 卐
卐 इदमासनं वो नमः ।। 卐

इसके बाद अंजलि बाँध कर विश्वेदेवाओं का आवाहन करें

卐 ॐ विश्वे देवासऽआगत शृणुता म इमꣳहवम । एदं बर्हिर्न्निषीदत ।।1 ।। ॐ विश्वे देवाः 卐
卐 शृणुतेमꣳ हवं मे ये अन्तरिक्षे यऽ उप द्यविष्ठ ।। आर्दव पुरूरव विश्वे देवान् आवाहिष्ये ।। 卐
卐 ॐ आगच्छन्तु महाभागा विश्वेदेवा महाबलाः । ये यत्र विहिताः श्राद्धे सावधाना भवन्तु ते ।। 卐

-: अर्घकरणम् :-

卐 दोनों विश्वेदेवाओं के सामने एक-एक खाली दोना रखें । नीचे लिखे मन्त्रों से उसमें सामान छोड़ें:- 卐
卐 ॐ शन्नोदेवी रभिष्टय आपो भवन्तुपीतये । शय्योरभिश्रवन्तुनः । कहकर जल भरे 卐
卐 ॐ पवित्रेस्थो व्वैष्णव्यौ सवितुर्व्वः प्रसवउत्पुनाम्य छिद्रेण पवित्रेण सूर्य्यस्य रश्मिभिः ।। तस्य 卐
卐 ते पवित्रपते पवित्रपूतस्य यत्कामः पुनेतच्छ्केयम् ।। 卐

यह बोलकर उसमें कुशा छोड़े । फिर यव (जौ) छोड़े ॐ यवोसि यवयास्म द्वेषो यवया रातीरित्यादि ।।

卐 उसमें चन्दन, पुष्प, सुपारी आदि मौन होकर छोड़े, फिर पितृपक्ष के विश्वादेवा का अर्घपात्र उठाकर बाँये हाथ पर रखें। उसकी कुशा भोजन पात्र पर रक्खें तथा कुश जल का छींटा दें। फिर उस पर दाहिना हाथ सीधा ही ढक कर मंत्र बोलें।

ॐ या दिव्या आपः पयसा संबभुवुर्या अंतरिक्षा उत्पार्थिवीर्या हिरण्यवर्णा यज्ञियास्ता न आपः शिवाः सꣳस्योनाः सुहवा भवन्तु ।। फिर अर्घ पात्र दाहिने हाथ पर रखकर संकल्प करें।

ॐ अद्यामुक गोत्राः... अस्मत् पितृ पितामह प्रपितामहाः अमुकामुक देवशर्माणं वसुरूद्रादित्य स्वरूपाः सपत्नीकानां महालयार्न्गत (पंक्तिमिलन) अपात्रक पार्वण श्राद्धे श्राद्ध सम्बधिनो विश्वे देवा एष हस्तार्घ वो नमः ।। ॐ अद्यामुक गोत्राः... अस्मत् माता पितामहि प्रपितामहि अमुकी अमुकी नाम्नी देव्याहः गायत्री सावित्री सरस्वती स्वरूपः महालयार्न्गत (पंक्तिमिलन) अपात्रक पार्वण श्राद्धे श्राद्ध सम्बधिनो विश्वे देवा एष हस्तार्घ वो नमः ।।

कह कर अंगुलियों के अग्रभाग से जल मोटक पर छोड़ दें। अर्घपात्र सामने रक्खें तथा उस पर पुनः मार्जन करें तथा उसकी कुशा उसी पात्र में रख दें। अर्घ पात्र ऊपर की तरफ रख दें फिर दूसरे पात्र की पूर्ववत् क्रिया करें।

इसके बाद मातामह पक्ष के विश्वेदेवा का अर्घपात्र बाँये हाथ पर रखें। उसकी कुशा भोजन पात्र पर रक्खे जल का मार्जन करके दाहिना हाथ उस पर सीधा ढक कर **ॐ या दिव्या आपः पयसा संबभुवुर्या अंतरिक्षा उत्पार्थिवीर्या हिरण्यवर्णा यज्ञियास्ता न आपः शिवाः सꣳस्योनाः सुहवा भवन्तु।।** पढ़कर दाहिने हाथ पर रखकर संकल्प पढ़े।

ॐ अद्यामुक गोत्राः... द्वितीय गोत्रस्य अस्मत मातामह प्रमातामह वृद्धप्रमातामहाः अमुकामुक देवशर्माणां अग्नि वरूण प्रजापति स्वरूपानाम यथासंभव सपत्नीकाः महालयार्न्गत (पंक्तिमिलन) अपात्रक पार्वण श्राद्धे श्राद्ध सम्बधिनो विश्वेदेवा एष हस्तार्घ वो नमः।।

ॐ अद्यामुक गोत्राः... द्वितीय गोत्रस्य अस्मत मातामहि प्रमातामहि वृद्धप्रमातामहिः अमुकी अमुकी नाम्नी देव्याहः गंगा यमुना सरस्वती स्वरूपः महालयार्न्गत (पंक्तिमिलन) अपात्रक पार्वण श्राद्धे श्राद्ध सम्बधिनो विश्वेदेवा एष हस्तार्घ वो नमः।।

इसका भी सारा जलादि मोटक पर छोड़ दें। सामने रखकर मार्जन करें तथा कुशा रखकर ऊपर की ओर रख दें और कहें

ॐ विश्वाभ्याम् देवाभ्याम् स्थानमसि।।

फिर दोनों अर्घपात्रों को ऊपर की ओर सीधा रख दें दक्षिणादान तक इन्हें स्पर्श न करें। इसके बाद

विश्वेदवाओं को पूजन करें ।

ॐ अयं वो गन्धः ।। ॐ इदं वः पुष्पं ।। ॐ अयं वो धूपः ।। ॐ वो दीपः ।। ॐअयं वः सफल ताम्बूलानि ।। ॐ अयं वो यज्ञोपवीतः ।। ॐ इदं वो वस्त्रं ।। ॐ यवाक्षतानि ।।

इस प्रकार दोनों का एक साथ पूजन करें तथा दोनों के संकल्प अगल अलग बोलें ।

ॐ अद्यामुक.. गोत्राः अस्मत् पितृ पितामह प्रपितामहाः अमुकामुक देवशर्माणं वसुरूदादित्य स्वरूपाः सपत्नीकाः महालयान्र्गत (पंक्तिमिलन) अपात्रक पार्वण श्राद्धे एतानि स्नान गन्ध धूपदीप ऋतु फल सफल ताम्बूल यज्ञोपवीत वासांसि विश्वेदेवा नमः ।। ॐ अद्यामुक.. गोत्राः अस्मत् माता पितामहि प्रपितामहि अमुकी अमुकी नाम्नी देव्याहः गायत्री सावित्री सरस्वती स्वरूपः महालयान्र्गत (पंक्तिमिलन) अपात्रक पार्वण श्राद्धे एतानि स्नान गन्ध धूपदीप ऋतु फल सफल ताम्बूल वासांसि विश्वेदेवा नमः ।।

संकल्प मातृपक्ष के विश्वेदेवा पर छोड़कर दूसरा संकल्प करें ।

ॐ अद्यामुक गोत्राः ... द्वितीय गोत्रस्य अस्मत मातामह प्रमातामह वृद्धप्रमातामहाः अमुकामुक देवशर्माणं अग्निव्वरूण प्रजापति स्वरूपाः यथा संभव सपत्नीकाः महालयान्र्गत (पंक्तिमिलन) अपात्रक पार्वण श्राद्धे एतानि स्नानगन्ध धूपदीप ऋतु फल सफल ताम्बूल यज्ञोपवीतवासांसि

श्राद्ध सम्बन्धिनो विश्वेदेवा नमः ।। ॐ अद्यामुक गोत्राः ... द्वितीय गोत्रस्य अस्मत मातामहि प्रमातामहि वृद्धप्रमातामहिः अमुकीअमुकी नाम्नी देव्याहः गंगा यमुना सरस्वती स्वरूपः महालयान्र्गत (पंक्तिमिलन) अपात्रक पार्वण श्राद्धे एतानि स्नानगन्ध धूपदीप ऋतु फल सफल ताम्बूल वासांसि श्राद्ध सम्बन्धिनो विश्वेदेवा नमः ।। 8024

इसके बाद विश्वेदेवा के सामने हाथ जोड़ कर कहें ।

ॐ अन्नहीनं क्रियाहीनं सत्वहीनं द्विजोत्तमाः ।श्राद्धंसम्पूर्णतामूयातु प्रसादात् भवता मम ।।

इसके बाद चुलक में जल भर कर दोनों के चारो ओर छोड़ता हुआ जल का मण्डल बनावें ।

ॐ यथा चक्रायुधोविष्णुः त्रयैलोक्यं परिरक्षति ।। एवं मण्डल तो येन सर्वभूतानि रक्षतु ।।

इसके बाद खड़ा होकर आसन नं.1 पर दक्षिणाभिमुख होकर बैठे तथा अपसव्य हो जायें । पश्चिम से पूर्व की ओर विछे पत्तो पर आसन दान करें । हाथ में तिल जल कुशादि लेकर एकतंत्रीय संकल्प बोलें ।

ॐ अद्यामुक गोत्राः अस्मत पितृ पितामह प्रपितामहाः अमुकामुक देवशर्माणः वसुरूद्रादित्यस्वरूपः सपत्नीकाः महालयान्र्गत (पंक्तिमिलन) अपात्रक पार्वण श्राद्धे एतानि दर्भासनानि त्रिधा विभज्य वः स्वधा ।। ॐ अद्यामुक गोत्राः अस्मत् माता पितामहि प्रपितामहि अमुकी अमुकी नाम्नी देव्याहः गायत्री सावित्री सरस्वती स्वरूपः महालयान्र्गत (पंक्तिमिलन) अपात्रक पार्वण श्राद्धे एतानि दर्भासनानि त्रिधा विभज्य वः स्वधा ।।

ॐ अद्यामुक गोत्राः द्वितीय गोत्रस्य अस्मत मातामह प्रमातामह वृद्धप्रमातामहाः अमुकामुक देवशर्माणं अग्निव्वरूण प्रजापतिस्वरूपः सपत्नीकः महालयार्न्गत (पंक्तिमिलन) अपात्रक पार्वण श्राद्धे एतानि दर्भासनानि त्रिधा विभज्य वः स्वधा।। ॐ अद्यामुक गोत्राः द्वितीय गोत्रस्य अस्मत मातामहि प्रमातामहि वृद्धप्रमातामहिः अमुकी अमुकी नाम्नी देव्याहः गंगा यमुना सरस्वती स्वरूपः महालयार्न्गत (पंक्तिमिलन) अपात्रक पार्वण श्राद्धे एतानि दर्भासनानि त्रिधा विभज्य वः स्वधा।।

यदि सबका अलग अलग कर रहें हों तो इस प्रकार संकल्प करें।

ॐ अद्यामुक गोत्राः अस्मत पिताः अमुक देवशर्मा वसुस्वरूपः सपत्नीकः महालयार्न्गत (पंक्तिमिलन) अपात्रक पार्वण श्राद्धे इदमासनं तस्मै स्वधा।। ॐ अद्यामुक गोत्राः अस्मत पितामह अमुक देवशर्मा रूद्रस्वरूपः सपत्नीकः महालयार्न्गत(पंक्तिमिलन) अपात्रक पार्वण श्राद्धे इदमासनं तस्मै स्वधा।।ॐ अद्यामुक गोत्राः अस्मत प्रपितामहः अमुक देवशर्मा आदित्यस्वरूपः सपत्नीकः महालयार्न्गत (पंक्तिमिलन) अपात्रक पार्वण श्राद्धे इदमासनं तस्मै स्वधा।।

ॐ अद्यामुक गोत्राः अस्मत माताः अमुकी नाम्नी देव्याहः गायत्री स्वरूपः महालयार्न्गत (पंक्तिमिलन) अपात्रक पार्वण श्राद्धे इदमासनं तस्यै स्वधा।। ॐ अद्यामुक गोत्राः अस्मत पितामहि अमुकी नाम्नी देव्याहः सावित्री स्वरूपः महालयार्न्गत(पंक्तिमिलन) अपात्रक पार्वण श्राद्धे इदमासनं तस्यै स्वधा।।ॐ अद्यामुक गोत्राः अस्मत प्रपितामहिः अमुकी नाम्नी देव्याहः सरस्वती स्वरूपः महालयार्न्गत (पंक्तिमिलन) अपात्रक पार्वण श्राद्धे इदमासनं तस्यै स्वधा।।

ॐ अद्यामुक गोत्राः द्वितीय गोत्रस्य अस्मत मातामह अमुक देवशर्मा अग्निस्वरूपः सपत्नीकःमहालयार्न्गत (पंक्तिमिलन) अपात्रक पार्वण श्राद्धे इदमासनं तस्मै स्वधा ।। ॐ अद्यामुक गोत्राः द्वितीय गोत्रस्य अस्मत प्रमातामह अमुक देवशर्मा वरूणस्वरूपः सपत्नीकः महालयार्न्गत (पंक्तिमिलन) अपात्रक पार्वण श्राद्धे इदमासनं तस्मै स्वधा ।। ॐ अद्यामुक गोत्राः द्वितीय गोत्रस्य अस्मत वृद्धप्रमातामह अमुक देवशर्मा प्रजापतिस्वरूपः सपत्नीकः महालयार्न्गत (पंक्तिमिलन) अपात्रक पार्वण श्राद्धे इदमासनं तस्मै स्वधा ।।

ॐ अद्यामुक गोत्राः द्वितीय गोत्रस्य अस्मत मातामहि अमुकी नाम्नी देव्याहः गंगा स्वरूपः महालयार्न्गत (पंक्तिमिलन) अपात्रक पार्वण श्राद्धे इदमासनं तस्यै स्वधा ।। ॐ अद्यामुक गोत्राः द्वितीय गोत्रस्य अस्मत प्रपितामहि अमुकी नाम्नी देव्याहः यमुना स्वरूपः महालयार्न्गत(पंक्तिमिलन) अपात्रक पार्वण श्राद्धे इदमासनं तस्यै स्वधा ।।ॐ अद्यामुक गोत्राः द्वितीय गोत्रस्य अस्मत वृद्धपितामहिः अमुकी नाम्नी देव्याहः सरस्वती स्वरूपः महालयार्न्गत (पंक्तिमिलन) अपात्रक पार्वण श्राद्धे इदमासनं तस्यै स्वधा ।।

इसके बाद पितरों का आवाहन करें ।

ॐआयन्तु नः पितरः सोम्यासोग्निष्वा ताः पार्थिभिर्देवयानैः ।

अस्मिन् यज्ञे स्वधयामदन्तोधि ब्रुवन्तु तेव्रन्त्वस्मान् ।।

फिर पितृपक्ष मातामहपक्ष के लिए अर्घ बनायें । सभी भोजन पात्रों के सामने एक-एक पात्र रखें । यदि क्रिया लाघव करना हो तो दोनो पक्षों के सामने एक-एक ही पात्र रक्खें । उनमें जल भरता हुआ यह मन्त्र पढ़े ।

ॐ शन्नोदेवीरभिष्टयऽ आपोभवन्तुपीतये। शंय्योरभिश्रवन्तु नः।।

इसके बाद उनमें कुशायें छोड़े।

ॐ पवित्रेस्थो व्वैष्णव्यौ सवितुर्व्वः प्रसवउत्पुनाम्य छिद्रेण पवित्रेण सूर्य्यस्य रश्मिभिः।। तस्य ते पवित्रपते पवित्रपूतस्य यत्कामः पुनेतच्छ्केयम्।।

इसके बाद उनमें तिल छोड़ें।

ॐ तिलोसि सोमदैवत्यो गोसवे देवनिर्मितः। प्रत्नमद्धिः पृक्तः स्वधया पितृन्लोकान् प्रीणाहि नः स्वधा।।

फिर गन्ध पुष्प मौन होकर छोड़े। इसके बाद अर्घपात्र उठाकर बाँये हाथ पर रखे उसकी पवित्री निकालकर सामने भोजन पात्र पर रख दें तथा कर्मपात्र के जल से उस पर मार्जन करें। दाहिना हाथ उल्टा करके अर्घपात्र पर ढक लें यथा यह मंत्र पढ़ें।

ॐ या दिव्या आपः पयसा संबभुवुर्या अंतरिक्षा उत्पार्थिवीर्या हिरण्यवर्णा यज्ञियास्ता नः आपः शिवाः सशंस्योनाः सुहवा भवन्तु।।

बोलकर सारा सामान पिता के आसन पर छोड़ दें। इसी प्रकार पितामह के साथ रूद्र, प्रपितामह के साथ आदित्य, मातामह के साथ अग्नि, प्रमातामह के साथ वरूण तथा वृद्ध प्रमातामह के साथ प्रजापति शब्द की योजना करते जायें तथा पूर्व की सारी क्रियायें उसी प्रकार करते जायें। यदि कार्य संक्षेप में करना हो तो यों करें।

ॐ अद्यामुक गोत्राः अस्मत पितृ पितामह प्रपितामहाः अमुकामुक देवशर्माणः वसुरूद्रादित्यस्वरूपा सपत्नीकाः महालयार्न्गत (पंक्तिमिलन) अपात्रक पार्वण श्राद्धे एषहस्तार्ध त्रिधा विभज्य वः स्वधा।। ॐ अद्यामुक .... गोत्राः अस्मत् माता पितामहि प्रपितामहि अमुकी अमुकी नाम्नी देव्याहः गायत्री सावित्री सरस्वती स्वरूपः महालयार्न्गत (पंक्तिमिलन) अपात्रक पार्वण श्राद्धे एषहस्तार्ध त्रिधा विभज्य वः स्वधा।।

ॐ अद्यामुक .... गोत्राः द्वितीय गोत्रस्य अस्मत मातामह प्रमातामह वृद्धप्रमातामह अमुकामुक देवशर्माणं अग्निवरूण प्रजापति स्वरूपः सपत्नीकाः महालयार्न्गत (पंक्तिमिलन) अपात्रक पार्वण श्राद्धे एष हस्तार्ध त्रिधा विभज्य वः स्वधा।।

ॐ अद्यामुक गोत्राः द्वितीय गोत्रस्य अस्मत मातामहि प्रमातामहि वृद्धप्रमातामहिः अमुकी अमुकी नाम्नी देव्याहः गंगा

यमुना सरस्वती स्वरूपः महालयान्र्गत (पंक्तिमिलन) अपात्रक पार्वण श्राद्धे एष हस्तार्धं त्रिधा विभज्य वः स्वधा ।।

इस प्रकार संकल्प बोलकर दर्भासनों पर पात्र का जल छोड़ दें । भोजन पात्र की कुशायें पुनः उन्हीं पात्रों में रख दें तथा एक बार पुनः मार्जन करके उन पात्रों को ऊपर की ओर उल्टा करके रख दें। दक्षिणादान तक इनको स्पर्श न करें । फिर सभी कुशवटों पर स्नान, गन्ध, पुष्प, तिल, धूप, दीप,ऋतुफल, सफलताम्बूल, यज्ञोपवीत, वस्त्रादि (साड़ी-ब्लाउज) अर्पण करें तथा हाथ में तिल जल कुशा लेकर संकल्प करें ।

ॐ अद्यामुक गोत्राः अस्मत पितृ पितामह प्रपितामहाः अमुकामुक देवशर्माणः वसुरूद्रादित्यस्वरूपः सपत्नीकाः महालयान्र्गत (पंक्तिमिलन) अपात्रक पार्वण श्राद्धे दर्भासनोपरि एतानि स्नान गन्ध पुष्प धूप दीप ऋतुफल सफलताम्बूल यज्ञोपवीत वासांसि त्रिधा विभज्य वः स्वधा ।।

ॐ अद्यामुक गोत्राः अस्मत् माता पितामहि प्रपितामहि अमुकी अमुकी नाम्नी देव्याहः गायत्री सावित्री सरस्वती स्वरूपः महालयान्र्गत (पंक्तिमिलन) अपात्रक पार्वण श्राद्धे दर्भासनोपरि एतानि स्नान गन्ध पुष्प धूप दीप ऋतुफल सफलताम्बूल वासांसि त्रिधा विभज्य वः स्वधा ।।

ॐ अद्यामुक गोत्राः द्वितीय गोत्रस्य अस्मत मातामह प्रमातामह वृद्धप्रमातामहाः अमुकामुक

देवशर्माणः अग्निवरूण प्रजापति स्वरूपः सपत्नीकाः महालयान्र्गत (पंक्तिमिलन) अपात्रक पार्वण श्राद्धे दर्भासनो परि एतानि स्नान गन्ध पुष्प धूप दीप ऋतुफल सफलताम्बूल यज्ञोपवीत वासांसि त्रिधा विभज्य वः स्वधा ।। ॐ अद्यामुक गोत्राः द्वितीय गोत्रस्य अस्मत मातामहि प्रमातामहि वृद्धप्रमातामहिः अमुकीअमुकी नाम्नी देव्याहः गंगा यमुना सरस्वती स्वरूपः महालयान्र्गत (पंक्तिमिलन) अपात्रक पार्वण श्राद्धे दर्भासनो परि एतानि स्नान गन्ध पुष्प धूप दीप ऋतुफल सफलताम्बूल वासांसि त्रिधा विभज्य वः स्वधा ।।

इसके बाद **सव्य** होकर जल लेकर दोनों पक्षों के चारों ओर जल का मण्डल करें ।

ॐ यथा चक्रायुधोविष्णुः त्रैलोक्यं परिरक्षति ।। एवं मण्डल तो येन सर्वभूतानि रक्षतु ।।

तीन बार पितृ गायत्री स्मरण करें ।

ॐ देवताभ्यः पितृभ्यः नमः फिर अपने सामने एक-पुटक में जलभर दें तथा श्राद्धीय पाक के अन्न से आगे लिखा मन्त्र बोलकर दो आहुतियाँ जल में दें ।

ॐ अग्नये कव्य वाहनाय स्वाहा । ॐ सोमाय पितृमते स्वाहा ।

उस पात्र को अलग रख दें तथा एक पत्ते पर अन्न तिल जल लेकर **अपसव्य** होकर अगला मंत्र बोलकर एक ओर रख दें । **ॐ इदमन्नं एतत भू-स्वामि पितृभ्यो स्वधा नमः ।।**

अब आसन नं. 1 से उठकर आसन नं. 3 पर बैठे तथा सव्य होकर विश्वेदेवाओं के भोजन पात्र पर सभी श्राद्धीय पाक का परिवेषण करें तथा दोनों के सामने एक-एक जल पूरित पात्र रख दें बायीं ओर घृत के लिए एक पात्र रखें। अनामिका से अन्न पर मधु लगावें और यह मन्त्र पढ़ें :-

ॐ मधुव्वाताऋतायते मधुक्षरन्ति सिन्धवः माध्वीनः सन्त्वोषधीः।। मधुनक्तमुतोषसो मधुमत्तपार्थिवꣳ रजः।। मधुद्यौरस्तु न पिता मधुमान्नो व्वनस्पतिम्मधुमा2ऽ अस्तुसूर्य्यः माध्वीर्गावो भवन्तु नः।। मधु मधु मधु

इसके बाद भोजन पात्र के बायीं ओर एक पात्र में घृत रखें तथा यह मन्त्र पढ़े :-

ॐ घृतं घृतपावानः पिवतवसां वसापावानः पिवतान्तरिक्ष हविरसि स्वाहा।। दिशः प्रदिशऽ आदिशो व्विदिसिऽउद्दिदभ्यः स्वाहा।।

इसके बाद दोनों हाथ की अंगुलियों के अग्रभाग को उत्तन रूप से व्युत्क्रम से भूमि पर टिकायें। दाहिना हाथ बाँयी ओर तथा बाँया हाथ दाहिनी ओर कर के मन्त्र बोलें।

ॐ पृथ्वी ते पात्रं द्यौरपिधानम् ब्राह्मणस्य मुखे अमृते अमृतं जुहोमि स्वाहा।। ॐ कृष्णहव्यरक्ष मदीयम्।। ॐ इदं विष्णुर्विचक्रमे त्रेधा निदधे पदम्।। समुढमस्यपाꣳ सुरेस्वाहा।

ॐ कृष्ण हव्य मिदं रक्ष मदीयम् ।।

इसके बाद अंगुलियों के अग्रभाग को क्रमशः अन्न जल तथा घृत में यह कहता हुआ स्पर्श करायें।

इदमन्नं इमाआपः इदआज्यं इदंहविः ।

तीन बार ऐसा कहें। यह करने के बाद अन्न पर यव के दाने छोड़े। फिर हाथ में जल यव मोटक लेकर दोनों का अलग-अलग संकल्प करें।

ॐ अद्यामुक गोत्राः अस्मत पितृ पितामह प्रपितामहाः अमुकामुक देवशर्माणः वसुरूद्रादित्यस्वरूपाः सपत्नीकाः महालयान्र्गत (पंक्तिमिलन) अपात्रक पार्वण श्राद्धे श्राद्ध सम्बधिनो विश्वेदेवा एतद् वो अन्नं परिवेष करन्नं घृताद्युपस्कर सहितं परिवेष्यं परिवेष्यमानं अमृतरूपं ब्राह्मण भोजन तृप्तिक्षमं वो नमः ।। ॐ अद्यामुक गोत्राः अस्मत् माता पितामहि प्रपितामहि अमुकी अमुकी नाम्नी देव्याहः गायत्री सावित्री सरस्वती स्वरूपः महालयान्र्गत (पंक्तिमिलन) अपात्रक पार्वण श्राद्धे श्राद्ध सम्बधिनो विश्वेदेवा एतद् वो अन्नं परिवेष करन्नं घृताद्युपस्कर सहितं परिवेष्यं परिवेष्यमानं अमृतरूपं ब्राह्मण भोजन तृप्तिक्षमं वो नमः ।।

ॐ अद्यामुक गोत्राः द्वितीय गोत्रस्य अस्मत मातामह प्रमातामह वृद्धप्रमातामहाः अमुकामुक

देवशर्माणः अग्निव्वरूण प्रजापति स्वरूपाः सपत्नीकाः महालयार्न्गत (पंक्तिमिलन) अपात्रक पार्वण श्राद्धे श्राद्ध सम्बधिनो विश्वेदेवा एतद् वो अन्नं परिवेष करन्नं घृताद्युपस्कर सहितं परिवेष्यं परिवेष्यमानं अमृतरूपं ब्राह्मण भोजन तृप्तिक्षमं वो नमः ।। ॐ अद्यामुक गोत्राः द्वितीय गोत्रस्य अस्मत मातामहि प्रमातामहि वृद्धप्रमातामहिः अमुकी अमुकी नाम्नी देव्याहः गंगा यमुना सरस्वती स्वरूपः महालयार्न्गत (पंक्तिमिलन) अपात्रक पार्वण श्राद्धे श्राद्ध सम्बधिनो विश्वेदेवा एतद् वो अन्नं परिवेष करन्नं घृताद्युपस्कर सहितं परिवेष्यं परिवेष्यमानं अमृतरूपं ब्राह्मण भोजन तृप्तिक्षमं वो नमः ।।

इसके बाद तीन बार पितृगायत्री एवं भगवान विष्णु का स्मरण करके पुनः आसन नं. 1 पर आ जायें अन्न का परिवेषण **सव्य** से ही होता है ।

पितृपक्ष एवं मातामह पक्ष के भोजन पात्रों पर श्राद्धीय पाक का परिवेषण करें । सामने एक पात्र में जल भर कर रख दें । **अपसव्य** होकर तर्जनी अंगुली से पहले कहा गया, मधुव्वाता से अन्न पर शहद लगायें । भोजन पात्र के बायें ओर एक पात्र में घृत रखकर 'घृत घृतपावानः' मन्त्र पढ़े तथा दोनों हाथ व्युत्क्रम से उत्तान रूप से सामने भूमि पर टिकावे तथा बोले ।

ॐ मधुव्वाताऋतायते मधुक्षरन्ति सिन्धवः माध्वीनः सन्त्वोषधीः ।। मधुनक्तमुतोषसो मधुमत्तपार्थिवᳬ रजः ।। मधुद्यौरस्तु न पिता मधुमान्नो व्वनस्पतिम्मधुमा२ऽ अस्तुसूर्य्यः

माध्वीर्गावो भवन्तु नः ।। मधु मधु मधु

ॐ घृतं घृतपावानः पिवतवसां वसापावानः पिवतान्तरिक्ष हविरसि स्वाहा ।। दिशः प्रदिशऽ आदिशो व्विदिसिऽउद्दिदभ्यः स्वाहा ।।

ॐ पृथ्वी ते पात्रं द्यौरपिधानम् ब्राह्मणस्य मुखे अमृते अमृतं जुहोमि स्वाहा ।। ॐ इदं विष्णुर्विचक्रमे त्रेधा निदधे पदम् ।। समुढमस्यपाᳪ सुरेस्वाहा ॐ कृष्णकव्यरक्ष मदीयम् ।।

यह बोलकर दाहिना हाथ उठा लें तथा बांया वैसे ही रक्खा रहे तथा अंगूठे से क्रमशः अन्न जल एवं घृत का स्पर्श करता हुआ बोलें ।

इदमन्नं । इमा आपः । इदमाज्यं । इदकविः ।।

इसी प्रकार तीन-तीन बार बोलकर पितादि के पात्र का स्पर्श करें । फिर अन्न पर तिल छोड़े ।

ॐ अपहता असुदा रक्षा ᳪ सिवेदिषत ।।

हाथ में तिल जल कुशा लेकर संकल्प बोलें ।

ॐ अद्यामुक गोत्राः अस्मत पितृ पितामह प्रपितामहाः अमुकामुक देवशर्माणः

वसुरूद्रादित्यस्वरूपाः सपत्नीकाः महालयार्न्गत (पंक्तिमिलन) अपात्रक पार्वण श्राद्धे भोजनपात्रोपरि एतद् वो अन्नं परिवेषकरन्नं घृताद्युपस्कर सहितं परिवेष्यं परिवेष्यमानं अमृतरूपं ब्राह्मण भोजन तृप्तिक्षमं त्रिधा विभज्य वः स्वधा। ॐ अद्यामुक गोत्राः अस्मत् माता पितामहि प्रपितामहि अमुकी अमुकी नाम्नी देव्याहः गायत्री सावित्री सरस्वती स्वरूपः महालयार्न्गत (पंक्तिमिलन) अपात्रक पार्वण श्राद्धे भोजनपात्रोपरि एतद् वो अन्नं परिवेषकरन्नं घृताद्युपस्कर सहितं परिवेष्यं परिवेष्यमानं अमृतरूपं ब्राह्मण भोजन तृप्तिक्षमं त्रिधा विभज्य वः स्वधा।

इसी प्रकार सारा कार्य मातामहादि के भोजनपात्र में करें तथा अन्न का संकल्प बोलें।

ॐ अद्यामुक गोत्राः द्वितीय गोत्रस्य अस्मत मातामह प्रमातामह वृद्धप्रमातामहाः अमुकामुक देवशर्माणाः अग्निव्वरूण प्रजापति स्वरूपाः सपत्नीकाः महालयार्न्गत (पंक्तिमिलन) अपात्रक पार्वण श्राद्धे भोजनपात्रोपरि एतद् वो अन्नं परिवेषकरन्नं घृताद्युपस्कर सहितं परिवेष्यं परिवेष्यमानं अमृतरूपं ब्राह्मण भोजन तृप्तिक्षमं त्रिधा विभज्य वः स्वधा।

ॐ अद्यामुक .... गोत्राः द्वितीय गोत्रस्य अस्मत मातामहि प्रमातामहि वृद्धप्रमातामहिः अमुकी अमुकी नाम्नी देव्याहः गंगा यमुना सरस्वती स्वरूपः महालयार्न्गत (पंक्तिमिलन) अपात्रक पार्वण श्राद्धे भोजनपात्रोपरि एतद् वो अन्नं परिवेषकरन्नं

घृताद्युपस्कर सहितं परिवेष्यं परिवेष्यमानं अमृतरूपं ब्राह्मण भोजन तृप्तिक्षमं त्रिधा विभज्य वः स्वधा ।

इसके बाद विकिर का पिण्ड देना चाहिए । श्राद्ध में नैऋत्य कोण में एक कुशा बिछाकर उस पर तिल जल छोड़ता हुआ कहे ।

ॐ असंस्कृत प्रणीतानाम् त्यागिनां कुलयोषिताम् ।उच्छिष्ट भागमादेयमूदर्भेषु विकिरासनम् ।।

इसके बाद एक पत्ते पर विकिर का पिण्ड लेकर आगे लिखा मंत्र बोल कर उसी कुशा पर औंधा दें ।

ॐ अग्निदग्धा ये जीवा ये प्रदग्धाः कुले मम । भूमौ दत्तेन तृप्यन्तु तृप्ता यान्तु परां गतिम् ।।

इसके बाद **सव्य** होकर तीन बार पितृगायत्री का स्मरण करें तथा भगवान विष्णु का स्मरण करें ।

ॐ देवताभ्यः पितृभ्यश्च महायोगिभ्य एव च ।स्वाहायै च स्वधायै च नित्यमेव नमो नमः ।।

कुछ लोग यहाँ पवित्री त्याग करा देते हैं । ऐसा आवश्यक नहीं है यदि चाहें तो कर सकते हैं यथेच्छ ।

इसके बाद **अपसव्य** होकर पिण्ड निर्माण का कार्य करें । धर्मपत्नी यदि श्राद्ध में सहयोग दे रही है तो यह कार्य उन्हीं को करना चाहिए । इस श्राद्ध में छह पिण्ड बनते हैं तथा कुछ भाग शेष रहता है । पिण्ड खीर, खोया (मावा) अथवा श्राद्ध की रसोई के बनते हैं । उसमें नमक उड़द तथा क्षारीय पदार्थों का प्रयोग न करें । केवल मधुर पदार्थों का प्रयोग करें । श्राद्ध में तेल तथा चने से बने पदार्थो का निषेध है । उसमें दूध, शहद, घृत, शक्कर, तिल आदि मिलाकर विल्व या आँवले के छह पिण्ड बनावें तथा कुछ भाग बचा लें । फिर

पिण्डदान के लिए बालू या मिट्टी से प्रादेश परिमाण के दक्षिण की ओर ढाल वाली, वेदियाँ बनायें। उन पर मोटक से जल छिड़कें तथा कहें:

अयोध्या मथुरा माया काशीकांचीह्यवन्तिका। पुरी द्वारवतीज्ञेया सप्तैताः मोक्षदायिकाः।।

ॐ पंचक्रोशं गयाक्षेत्रं क्रोशमेकम् गयाशिर। यत्र तत्र स्मरयिष्यामि पितृणां तारणाय च।।

इसके बाद वेदियों पर उत्तर से दक्षिण की ओर एक-एक रेखा खींचते हुए कहें।

ॐ अपहता असुदा रक्षा ंसिवेदिषत।।

फिर एक उल्मुक आदि जलाकर दोनों वेदियों पर घुमाकर नैऋत्य दिशा में छोड़े तथा यह मन्त्र बोलें।

ॐ ये रूपाणि प्रतिमुन्चवमानाः असुरासन्त स्वधया चरन्ति।
परापुरोनिपुरो से भरन्तयग्निष्टांल्लोकन् प्रणुदात् अस्मात्।।

इसके बाद छिन्न मूल (जड़ रहित) तीन-2 कुशाये दक्षिणाग्र रूप उन पर बिछायें। फिर प्रत्येक वेदी के पास तीन-तीन दोने रखें तथा उनमें जल चन्दन तिल पुष्पादि छोड़े अथवा पितृपक्ष एवं मातृपक्ष के लिये एक एक दोना अवनेजन पात्र बनायें। एक पात्र हाथ पर रखे तथा एक तंत्रीय संकल्प करें।

ॐ अद्यामुक गोत्राः अस्मत पितृ पितामह प्रपितामहः अमुकामुक देवशर्माणः वसुरुद्रादित्य

स्वरूपाः सपत्नीकाः महालयान्र्गत (पंक्तिमिलन) अपात्रक पार्वण श्राद्धे पिण्डस्थानेषु अत्रावनेनिक्ष्व त्रिधा विभज्य वः स्वधा। ॐ अद्यामुक गोत्राः .... अस्मत् माता पितामहि प्रपितामहि अमुकीअमुकी नाम्नी देव्याहः गायत्री सावित्री सरस्वती स्वरूपः महालयान्र्गत (पंक्तिमिलन) अपात्रक पार्वण श्राद्धे पिण्डस्थानेषु अत्रावनेनिक्ष्व त्रिधा विभज्य वः स्वधा।

इसी प्रकार नाना पक्ष के लिए करें।

ॐ अद्यामुक गोत्राः .... द्वितीय गोत्रस्य अस्मत मातामह प्रमातामह वृद्धप्रमातामह अमुकामुक देवशर्माणः अग्निव्वरूण प्रजापतिस्वरूपाः सपत्नीकाः महालयान्र्गत (पंक्तिमिलन) अपात्रक पार्वण श्राद्धे पिण्डस्थानेषु अत्रावने निक्ष्व त्रिधा विभज्य वः स्वधा।। ॐ अद्यामुक गोत्राः द्वितीय गोत्रस्य अस्मत मातामहि प्रमातामहि वृद्धप्रमातामहिः अमुकीअमुकी नाम्नी देव्याहः गंगा यमुना सरस्वती स्वरूपः महालयान्र्गत (पंक्तिमिलन) अपात्रक पार्वण श्राद्धे पिण्डस्थानेषु अत्रावने निक्ष्व त्रिधा विभज्य वः स्वधा।

कहकर छोड़ दें।

इसके बाद उन पात्रों को वेदी के समीप रखें तथा सबके लिए अलग-अलग पिण्डदान करें। बायें हाथ से पिण्ड लेकर दाहिने हाथ पर रखें तथा यदि धर्मपत्नी श्राद्ध में सहयोग कर रही हो तो पिण्ड लेकर पति के दाहिने हाथ पर रखें तथा उस पर जल तिल छोड़कर सबका अलग अलग पिण्डदान करे।

ॐ अद्यामुक गोत्राः .... अस्मत पिता अमुक देवशर्मा वसुस्वरूपाः सपत्नीकाः महालयार्न्गत (पंक्तिमिलन) अपात्रक पार्वण श्राद्धे एष सान्नोदक पिण्ड पयतिलमधुघृत सहितं तस्मै स्वधा ।

ॐ अद्यामुक गोत्राः .... अस्मत माता अमुकी नाम्नी देव्याहः गायत्री स्वरूपः महालयार्न्गत (पंक्तिमिलन) अपात्रक पार्वण श्राद्धे एष सान्नोदक पिण्ड पयतिलमधुघृत सहितं तस्यै स्वधा ।

ॐ अद्यामुक गोत्राः .... अस्मत पितामह अमुक देवशर्मा रुद्रस्वरूपः सपत्नीकाः महालयार्न्गत (पंक्तिमिलन) अपात्रक पार्वण श्राद्धे एष सान्नोदक पिण्ड पयतिलमधुघृत सहितं तस्मै स्वधा ।

ॐ अद्यामुक गोत्राः .... अस्मत पितामहि अमुकी नाम्नी देव्याहः सावित्री स्वरूपः महालयार्न्गत (पंक्तिमिलन) अपात्रक पार्वण श्राद्धे एष सान्नोदक पिण्ड पयतिलमधुघृत सहितं तस्यै स्वधा ।

ॐ अद्यामुक गोत्राः .... अस्मत प्रपितामह अमुक देवशर्मा आदित्यस्वरूपाः सपत्नीकः महालयार्न्गत (पंक्तिमिलन) अपात्रक पार्वण श्राद्धे एष सान्नोदक पिण्ड पयतिलमधुघृत सहितं तस्मै स्वधा । ॐ अद्यामुक गोत्राः .... अस्मत प्रपितामहि अमुकी नाम्नी देव्याहः सरस्वती स्वरूपाः महालयार्न्गत (पंक्तिमिलन) अपात्रक पार्वण श्राद्धे एष सान्नोदक पिण्ड पयतिलमधुघृत सहितं तस्यै स्वधा ।

ॐ अद्यामुक गोत्राः .... द्वितीय गोत्रस्य अस्मत मातामह अमुक देवशर्मा अग्निस्वरूपः

महालयार्न्गत (पंक्तिमिलन) अपात्रक पार्वण श्राद्धे एष सान्नोदक पिण्ड पयतिलमधुघृत सहितं तस्मै स्वधा । ॐ अद्यामुक गोत्राः .... द्वितीय गोत्रस्य अस्मत मातामहि अमुकी नाम्नी देव्याहः गंगा स्वरूपः महालयार्न्गत (पंक्तिमिलन) अपात्रक पार्वण श्राद्धे एष सान्नोदक पिण्ड पयतिलमधुघृत सहितं तस्यै स्वधा ।

ॐ अद्यामुक गोत्राः .... द्वितीय गोत्रस्य अस्मत प्रमातामह अमुक देवशर्मा वरुण स्वरूपः सपत्नीकाः महालयार्न्गत (पंक्तिमिलन) अपात्रक पार्वण श्राद्धे एष सान्नोदक पिण्ड पयतिलमधुघृत सहितं तस्मै स्वधा । ॐ अद्यामुक गोत्राः .... द्वितीय गोत्रस्य अस्मत प्रमातामहि अमुकी नाम्नी देव्याहः यमुना स्वरूपाः महालयार्न्गत (पंक्तिमिलन) पार्वण श्राद्धे एष सान्नोदक पिण्ड पयतिलमधुघृत सहितं तस्यै स्वधा ।

ॐ अद्यामुक गोत्राः .... द्वितीय गोत्रस्य अस्मत वृद्धप्रमातामह अमुक देवशर्मा प्रजापति स्वरूपाः सपत्नीकः महालयार्न्गत (पंक्तिमिलन) अपात्रक पार्वण श्राद्धे एष सान्नोदक पिण्ड पयतिलमधुघृत सहितं तस्मै स्वधा । ॐ अद्यामुक गोत्राः .... द्वितीय गोत्रस्य अस्मत वृद्धप्रमातामहि अमुकी नाम्नी देव्याहः सरस्वती स्वरूपः महालयार्न्गत (पंक्तिमिलन) पार्वण श्राद्धे एष सान्नोदक पिण्ड पयतिलमधुघृत सहितं तस्यै स्वधा ।

इसी प्रकार पितामह प्रपितामह मातामह प्रमातामह वृद्ध प्रमाता आदि के लिए पूर्वोक्त संकल्प पूर्वक दें। पिण्डदान के बाद पिण्ड का शेषांक हाथ पर रखें तथा बायें हाथ से कुशा के द्वारा दोनों पक्षों के पिण्डों पर '**ॐ लेपभुजस्तृप्यंताम्**' कहता हुआ छोड़ दें। अब नीवी विसर्जन करें तथा बायीं ओर मुँह घुमाकर श्वांस खीचें तथा वह श्वांस पिण्डों पर छोड़ता हुआ मन्त्र पढ़ें।

ॐ अत्र पितरो मादयध्वं यथाभागमावृषायध्वम् ॐ अमीमदंत पितरो यथाभागावृषायिषत।

फिर पितरों का स्वर्णमूर्ति तुल्य ध्यान करें। इसके बाद जो अवनेजन पात्र पहले के रक्खें हैं उनमें पुनः जल भरे तथा पिण्डों पर उनका जल चढ़ा दें। इसे प्रत्यवनेजन कहते हैं। पितृपक्ष का पात्र लेकर बोलें।

ॐ अद्यामुक गोत्राः .... अस्मत पितृ पितामह प्रपितामह अमुकामुक देवशर्माणः वसुरुद्रआदित्यस्वरूपाः सपत्नीकाः महालयान्र्गत (पंक्तिमिलन) अपात्रक पार्वण श्राद्धे पिण्डोपरि प्रत्यवने निक्ष्व त्रिधा विभज्य वः स्वधा। ॐ अद्यामुक गोत्राः .... अस्मत माता पितामहि प्रपितामहिः अमुकीअमुकी नाम्नी देव्याहः गायत्री सावित्री सरस्वती स्वरूपाः महालयान्र्गत (पंक्तिमिलन) अपात्रक पार्वण श्राद्धे पिण्डोपरि प्रत्यवने निक्ष्व त्रिधा विभज्य वः स्वधा।

ॐ अद्यामुक गोत्राः .... द्वितीय गोत्रस्य अस्मत मातामह प्रमातामह वृद्धप्रमातामह अमुकामुक

देवशर्माणः अग्नि वरुण प्रजापति स्वरूपाः सपत्नीकाः महालयार्न्गत (पंक्तिमिलन) अपात्रक पार्वण श्राद्धे पिण्डोपरि प्रत्यवने निक्ष्व त्रिधा विभज्य वः स्वधा । ॐ अद्यामुक गोत्राः .... द्वितीय गोत्रस्य अस्मत मातामहि प्रमातामहि वृद्धप्रमातामहि अमुकी अमुकी नाम्नी देव्याहः गंगा यमुना सरस्वती स्वरूपाः महालयार्न्गत (पंक्तिमिलन) अपात्रक पार्वण श्राद्धे पिण्डोपरि प्रत्यवने निक्ष्व त्रिधा विभज्य वः स्वधा ।

पात्रों को अलग रख दें तथा उसके पुष्पादि पिण्डो पर चढ़ा दें। फिर सभी पिण्डों पर वस्त्र, यज्ञोपवीत चढ़ायें । वस्त्र के अभाव में सुत्र ही चढ़ायें । यह मंत्र पढ़े तथा बाद में संकल्प पढ़ें ।

ॐ नमो वः पितरो रसाय नमा वः पितरः शोषाय नमो वः पितरोजीवाय नमा वः पितरः स्वधायै नमो वः पितरोघोराय नमो वः पितरो मन्यवे नमो वः पितरः पितरो नमो वो गृहान्नः पितरोदत्त सतो वः पितरो देष्मैतद्वः पितरो पितरोवासऽआधन्त ।।

ॐ अद्यामुक गोत्राः अस्मत पितृ पितामह प्रपितामहाः अमुकामुक देवशर्माणः वसुरूद्रादित्य स्वरूपाः सपत्नीकाः महालयार्न्गत (पंक्तिमिलन) अपात्रक पार्वण श्राद्धे पिण्डोपरि एतद् वासांसि त्रिधा विभज्य वः स्वधा । ॐ अद्यामुक गोत्राः अस्मत माता पितामहि प्रपितामहिः अमुकीअमुकी नाम्नी देव्याहः गायत्री सावित्री सरस्वती स्वरूपाः महालयार्न्गत (पंक्तिमिलन) अपात्रक पार्वण श्राद्धे एतद् वासांसि त्रिधा विभज्य वः स्वधा ।
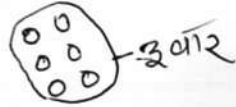
(मातामह पक्षीय संकल्प)

ॐ अद्यामुक गोत्राः .... द्वितीय गोत्रस्य अस्मत मातामह प्रमातामहाः वृद्धप्रमातामहाः अमुकामुक देवशर्माणः अग्निव्वरूण प्रजापति स्वरूपाः सपत्नीकाः महालयान्र्गत (पंक्तिमिलन) अपात्रक पार्वण श्राद्धे पिण्डोपरि एतद् वासांसि त्रिधा विभज्य वः स्वधा । ॐ अद्यामुक गोत्राः .... द्वितीय गोत्रस्य अस्मत मातामहि प्रमातामहि वृद्धप्रमातामहिः अमुकीअमुकी नाम्नी देव्याहः गंगा यमुना सरस्वती स्वरूपः महालयान्र्गत (पंक्तिमिलन) अपात्रक पार्वण श्राद्धे पिण्डोपरि एतद् वासांसि त्रिधा विभज्य वः स्वधा ।

दोनो पक्षों के पिण्डों पर जल चढ़ावें तथा दोनों का पृथक-2 संकल्प बोलें । इसके बाद चन्दन, तिल, पुष्प, धूप, दीप, नैवेद्य, फल, पान, सुपारी, लौंग, इलायची, दक्षिण आदि चढ़ा कर पूजन करें । फिर सव्य होकर पितृगायत्री का जप करते हुए दायें हाथ में जल लेकर पिण्डों पर चढ़ायें एवं अपसव्य होकर संकल्प बोलें ।

ॐ अद्यामुक गोत्राः अस्मत पितृ पितामह प्रपितामहाः अमुकामुक देवशर्माणः वसुरूद्रादित्य स्वरूपाः सपत्नीकाः महालयान्र्गत (पंक्तिमिलन) अपात्रक पार्वण श्राद्धे पिण्डोपरि गन्धाद्यर्चनं त्रिधा विभज्य वः स्वधा । ॐ अद्यामुक गोत्राः .... अस्मत माता पितामहि प्रपितामहिः अमुकीअमुकी नाम्नी देव्याहः गायत्री सावित्री सरस्वती स्वरूपाः महालयान्र्गत (पंक्तिमिलन) अपात्रक पार्वण श्राद्धे पिण्डोपरि गन्धाद्यर्चनं त्रिधा विभज्य वः स्वधा ।

ॐ अद्यामुक गोत्राः .... द्वितीय गोत्रस्य अस्मत मातामह प्रमातामहः वृद्धप्रमातामहाः अमुकामुक देवशर्माणः अग्निव्वरूण प्रजापति स्वरूपाः सपत्नीकाः महालयान्र्गत(पंक्तिमिलन) अपात्रक पार्वण श्राद्धे पिण्डोपरि गन्धाद्यर्चनं त्रिधा विभज्य वः स्वधा। ॐ अद्यामुक गोत्राः .... द्वितीय गोत्रस्य अस्मत मातामहि प्रमातामहि वृद्धप्रमातामहिः अमुकीअमुकी नाम्नी देव्याहः गंगा यमुना सरस्वती स्वरूपः महालयान्र्गत (पंक्तिमिलन) अपात्रक पार्वण श्राद्धे पिण्डोपरि गन्धाद्यर्चनं त्रिधा विभज्य वः स्वधा।।

सव्य होकर पूर्वाग्र धारा दोनों के पिण्डों पर छोड़े।

ॐ अघोरा पितरः सन्तु - ॐ अघोरा मातरः सन्तु

फिर अंजली बांध कर आशीर्वाद मांगे। सव्य

ॐ गोत्रं नो वर्धताम्। दातारो नोऽभि वर्धन्ताम्। वेदाः सन्तति रेव च। श्रद्धा च नो माव्यगमद बहु देयं च नोऽस्तु। अन्नं च नो बहुभवेद्। अतिथिश्च लभेमहि। याचिताश्च नः सन्तु। माच याचिष्म कश्चन। एताः सत्याशिषः सन्तु।

इसके बाद **अपसव्य** होकर पिण्डों पर पितृतीर्थ से दूध चढ़ायें।

ॐ उर्ज्जं बहान्तिरमृतं घृतं पयः कीलालं परिस्त्रुतम् । स्वधास्वथ तर्पयत् में पितृन् ।।

इसके बाद **सव्य** हो जायें नीचे झुक कर पिण्डों को सुंघे । **पिण्ड के नीचे की कुशायें दक्षिण की ओर से निकाल खड़े हो जायें । पिण्डाधारां कुशां संचालयेत** कुशाओं को अग्नि में छोड़ दे तथा हाथ पैर धोकर पुनः उत्तरामुख वाले आसन पर बैठ जायें तथा **सव्य** होकर तीन बार पितृ गायत्री पढ़े तथा रक्षादीप का विसर्जन करके आसन नम्बर 3 पर बैठ जायें तथा दोनों विश्वेदेवाओं पर जल, यव, चन्दन, पुष्पादि छोड़े ।

ॐ शिवा आपः सन्तु (जल) ॐ गन्धा पान्तु (चन्दन)

ॐ अक्षतं चारिष्टंचास्तु (यव) ॐ पुष्पाणि पान्तु (पुष्प)

इसके बाद जल लेकर दोनों का अलग-अलग संकल्प करें ।

ॐ अद्यामुक गोत्राः .... अस्मत पितृ पितामह प्रपितामहाः अमुकामुक देवशर्माणः वसुरूद्रादित्य स्वरूपाः सपत्नीकाः महालयान्र्गत (पंक्तिमिलन) अपात्रक पार्वण श्राद्धे विश्वेदेवा कृतैकृत अन्नपानादिकं अक्षय्यमस्तु ।। ॐ अद्यामुक गोत्राः .... अस्मत माता पितामहि प्रपितामहिः अमुकीअमुकी नाम्नी देव्याहः गायत्री सावित्री सरस्वती स्वरूपाः महालयान्र्गत (पंक्तिमिलन) अपात्रक पार्वण श्राद्धे विश्वेदेवा कृतैकृत अन्नपानादिकं अक्षय्यमस्तु ।।

इसी प्रकार मातामहादि के लिए भी करें ।

ॐ अद्यामुक गोत्राः .... द्वितीय गोत्रस्य अस्मत मातामह प्रमातामह वृद्धप्रमातामहाः अमुकामुक देवशर्माणः अग्निव्वरूण प्रजापति स्वरूपाः सपत्नीकाः महालयान्र्गत (पंक्तिमिलन) अपात्रक पार्वण श्राद्धे विश्वेदेवा कृतैकृत अन्नपानादिकं अक्षय्यमस्तु ।। ॐ अद्यामुक गोत्राः .... द्वितीय गोत्रस्य अस्मत मातामहि प्रमातामहि वृद्धप्रमातामहिः अमुकीअमुकी नाम्नी देव्याहः गंगा यमुना सरस्वती स्वरूपः महालयान्र्गत (पंक्तिमिलन) अपात्रक पार्वण श्राद्धे विश्वेदेवा कृतैकृत अन्नपानादिकं अक्षय्यमस्तु ।।

तीन बार कहें **ॐ विष्णवे नमः ! विष्णवे नमः !! विष्णवे नमः !!!**

जब आसन नं. 1 पर बैठ जायें तथा **अपसव्य** हो जायें । पिता से वृद्धप्रमातामह तक के भोजन पात्रों पर इस प्रकार पूजन करें ।

ॐ शिवा आपः सन्तु (जल) **ॐ गन्धा पान्तु (चन्दन रोली)**

ॐ अक्षतं चारिष्टंचास्तु (तिल) **ॐ पुष्पाणि पान्तु (पुष्प)**

विश्वेदेवा

फिर इनका पृथक पृथक संकल्प बोलें ।

ॐ अद्यामुक गोत्राः. अस्मत पितृ पितामह प्रपितामहाः अमुकामुक देवशर्माणः वसुरूद्रादित्य

स्वरूपाः सपत्नीकाः महालयार्न्गत (पंक्तिमिलन) अपात्रक पार्वण श्राद्धे कृतैकृत अन्नपानादिकं अक्षय्यमस्तु ।। ॐ अद्यामुक गोत्राः .... अस्मत माता पितामहि प्रपितामहिः अमुकीअमुकी नाम्नी देव्याहः गायत्री सावित्री सरस्वती स्वरूपाः महालयार्न्गत (पंक्तिमिलन) अपात्रक पार्वण श्राद्धे कृतैकृत अन्नपानादिकं अक्षय्यमस्तु ।।

इसी प्रकार मातामह पक्ष का संकल्प बोलें ।

ॐ अद्यामुक गोत्राः .... द्वितीय गोत्रस्य अस्मत मातामह प्रमातामह वृद्धप्रमातामहाः अमुकामुक देवशर्माणः अग्निव्वरूण प्रजापति स्वरूपाः सपत्नीकाः महालयार्न्गत (पंक्तिमिलन) अपात्रक पार्वण श्राद्धे कृतैकृत अन्नपानादिकं अक्षय्यमस्तु ।। ॐ अद्यामुक गोत्राः .... द्वितीय गोत्रस्य अस्मत मातामहि प्रमातामहि वृद्धप्रमातामहिः अमुकीअमुकी नाम्नी देव्याहः गंगा यमुना सरस्वती स्वरूपः महालयार्न्गत (पंक्तिमिलन) अपात्रक पार्वण श्राद्धे कृतैकृत अन्नपानादिकं अक्षय्यमस्तु ।।

तीन बार कहें ॐ विष्णवे नमः ! विष्णवे नमः !! विष्णवे नमः !!!

दक्षिणादानम

दोनों पक्षों के विश्वेदेवाओं के अर्घपात्रों को हिलायें **सव्य** होकर तथा दाहिने हाथ में जल यव द्रव्यादि लेकर दोनों का अलग अलग संकल्प बोलें

ॐ अद्यामुक गोत्राः.. अस्मत पितृ पितामह प्रपितामहाः अमुकामुक देवशर्माणाः वसुरूद्रादित्य स्वरूपाः सपत्नीकाः महालयान्र्गत (पंक्तिमिलन) अपात्रक पार्वण श्राद्धे श्राद्ध प्रतिष्ठा सिद्धयर्थ हिरण्यं अग्निदैवतम् तन्मूल्योप कल्पितं द्रव्य रूपं दक्षिणां विश्वेदेवा यथानाम गोत्राय .... ब्राह्मणाय दातुमहं मृत्सृजे ।। ॐ अद्यामुक गोत्राः.. अस्मत माता पितामहि प्रपितामहिः अमुकीअमुकी नाम्नी देव्याहः गायत्री सावित्री सरस्वती स्वरूपाः महालयान्र्गत (पंक्तिमिलन) अपात्रक पार्वण श्राद्धे श्राद्ध प्रतिष्ठा सिद्धयर्थ हिरण्यं अग्निदैवतम् तन्मूल्योप कल्पितं द्रव्य रूपं दक्षिणां विश्वेदेवा यथानाम गोत्राय ब्राह्मणाय दातुमहं मृत्सृजे ।।

ॐ अद्यामुक गोत्राः .... द्वितीय गोत्रस्य अस्मत मातामह प्रमातामह वृद्धप्रमातामहाः अमुकामुक देवशर्माणः अग्निव्वरूण प्रजापति स्वरूपाः सपत्नीकाः महालयान्र्गत (पंक्तिमिलन) अपात्रक पार्वण श्राद्धे श्राद्ध प्रतिष्ठा सिद्धयर्थ हिरण्यं अग्निदैवतम् तन्मूल्योप कल्पितं द्रव्य रूपं दक्षिणां विश्वेदेवा यथानाम गोत्राय .... ब्राह्मणाय दातुमहं मृत्सृजे ।। ॐ अद्यामुक गोत्राः .... द्वितीय गोत्रस्य अस्मत मातामहि प्रमातामहि वृद्धप्रमातामहिः अमुकीअमुकी नाम्नी देव्याहः गंगा यमुना सरस्वती स्वरूपः महालयान्र्गत (पंक्तिमिलन) अपात्रक पार्वण श्राद्धे श्राद्ध प्रतिष्ठा सिद्धयर्थ हिरण्यं अग्निदैवतम् तन्मूल्योप कल्पितं द्रव्य रूपं दक्षिणां विश्वेदेवा यथानाम गोत्राय .... ब्राह्मणाय दातुमहं मृत्सृजे ।।

इसके बाद **अपसव्य** होकर दक्षिणाभिमुख वाले आसन पर बैठ जायें तथा पितृादिकों को दक्षिणा दान करें :-

ॐ अद्यामुक गोत्राः.. अस्मत पितृ पितामह प्रपितामहाः अमुकामुक देवशर्माणः वसुरूद्रादित्य स्वरूपाः सपत्नीकः महालयान्र्गत (पंक्तिमिलन) अपात्रक पार्वण श्राद्धे श्राद्ध प्रतिष्ठा सिद्धयर्थ रजतं चन्द्रदैवतम् हस्तग्रहीतं द्रव्य रूपं दक्षिणां नानानाम् गोत्रेभ्यो ब्राह्मणेभ्यो पृथक पृथक दातुमहं मुत्सृजे ।। ॐ अद्यामुक गोत्राः.. अस्मत माता पितामहि प्रपितामहिः अमुकीअमुकी नाम्नी देव्याहः गायत्री सावित्री सरस्वती स्वरूपाः महालयान्र्गत (पंक्तिमिलन) अपात्रक पार्वण श्राद्धे श्राद्ध प्रतिष्ठा सिद्धयर्थ रजतं चन्द्रदैवतम् हस्तग्रहीतं द्रव्य रूपं दक्षिणां नानानाम् गोत्रेभ्यो ब्राह्मणेभ्यो पृथक पृथक दातुमहं मुत्सृजे ।।

ॐ अद्यामुक गोत्राः .... द्वितीय गोत्रस्य अस्मत मातामह प्रमातामह वृद्धप्रमातामहाः अमुकामुक देवशर्माणः अग्निव्वरूण प्रजापति स्वरूपाः सपत्नीकाः महालयान्र्गत (पंक्तिमिलन) अपात्रक पार्वण श्राद्धे श्राद्ध प्रतिष्ठा सिद्धयर्थ हिरण्यं अग्निदैवतम् तन्मूल्योप कल्पितं द्रव्य रूपं दक्षिणां यथानाम गोत्राय .... ब्राह्मणाय दातुमहं मृत्सृजे ।।

ॐ अद्यामुक गोत्राः .... द्वितीय गोत्रस्य अस्मत मातामहि प्रमातामहि वृद्धप्रमातामहिः अमुकीअमुकी नाम्नी देव्याहः गंगा

यमुना सरस्वती स्वरूपः महालयार्न्तत (पंक्तिमिलन) अपात्रक पार्वण श्राद्धे श्राद्ध प्रतिष्ठा सिद्धयर्थं हिरण्यं अग्निदैवतम् तन्मूल्योप कल्पितं द्रव्य रूपं दक्षिणां यथानाम गोत्राय .... ब्राह्मणाय दातुमहं मृत्सृजे ।।

वह दक्षिणा तीनों भोजन पात्र के समीप रख दें । फिर हाथ में तिल लेकर विसर्जन करें ।

ॐ व्वाजे व्वाजे वत बाजिनो धनेषु विप्राऽअमृता ऋतज्ञा । अस्य मध्वः पिवतमादयध्वं तृप्ता यातु पार्थिभिर्देवयानैः ।। फिर सव्य होकर जौ छोड़कर विश्वेदेवा का विसर्जन करें ।

ॐ विश्वेदेवा प्रीयन्ताम' इसके बाद तीन बार पितृगायत्री का जप करें ।

ॐ यस्य स्मृत्या च नामोक्त्या तपोयज्ञक्रियादिषुन्यूनं सम्पूर्णतां यातु सद्यो वन्दे तमच्युतम् ।। प्रमादात् कुर्वताम्कर्म प्रच्वेताध्वरेषु यत् । स्मरणा देवतद्विष्णोः सम्पूर्णताम् स्यादितिश्रृतिः

इसके बाद कर्म सांगता के लिए आचार्य दक्षिणा का संकल्प बोलें ।

ॐ अद्यामुक गोत्राः..शर्माऽहं कृतैकृत पार्वण श्राद्ध प्रतिष्ठा सिद्धयर्थं हस्तग्रहीतम् द्रव्यरूपं दक्षिणां अमुक गोत्राय ... ब्राह्मणाय आचार्याय दातुमहं मृत्सृजे ।।

इसके बाद भगवान विष्णु का स्मरण करें ।

।। इत्यलम् ।।

गोदान

ॐ देशकालौ संकीर्त्य गोत्रः अमुक नाम शर्माहं अस्मत पिता (माता) अमुक देवशर्माः वसुस्वरूपः सपत्नीकः महालयार्न्तत (पंक्तिमिलन) अपात्रक श्राद्धार्न्गत गोलोकवास फलावाप्तये हस्त ग्रहीतं द्रव्यं गो निष्क्रिय भूतं न्यूनातिरिक्तदोष परिहार्थं रजतं चन्द्रदैवतम् यथानामगोत्राय ब्राह्मणाय दातुं अहम् मुत्सृजे श्रीकृष्णापर्ण अस्तु ।

अन्नदान

ॐ देशकालौ संकीर्त्य गोत्रः अमुक नाम शर्माहं अस्मत पिता (माता) अमुक देवशर्माः वसुस्वरूपः सपत्नीकः महालयार्न्तत (पंक्तिमिलन) अपात्रक श्राद्धार्न्गत परलोके महाक्षुधा पिपासा दूरी करणार्थं श्री विष्णु दैवतं प्रीत्यर्थं आमान्न दान निष्क्रिय भूतं अमुक गोत्रः अमुक शर्माणं दातुं अहम् मुत्सृजे श्रीकृष्णापर्ण अस्तु ।

शैयादान

ॐ देशकालौ संकीर्त्य गोत्रः अमुक नाम शर्माहं अस्मत पिता (माता) अमुक देवशर्माः वसुस्वरूपः सपत्नीकः महालयार्न्तत (पंक्तिमिलन) अपात्रक श्राद्धार्न्गत परलोके सुख शयनार्थं इमां शैयां सालंकारां सोपस्करां सहितां मनसः कल्पितं द्रव्यादियुताम अमुक गोत्रः अमुक शर्माणं त्वां महं वृणे श्रीकृष्णापर्ण अस्तु ।

हमारे अन्य उपयोगी संकलन

शिव सपर्या पद्धति

समस्त प्रयोजनीय विधि से अलंकृत

संकलक स्व0 पं0 देवनारायण गौड़ 'दैवज्ञ'

सहयोगी पं0 विनय कुमार गौड़

दैवज्ञ मन्दिर

कानपुर द्वारा प्रकाशित

मूल्य 130/-

पुस्तक शिवार्चन की विधियों का अनूठा संग्रह है। इसमें शिववास, शिवपूजन, रूद्राष्टाध्यायी, शतरुद्रिय, रुद्रस्वाहकार, सहस्रनामावलि, अष्टोत्तरनाम, विल्बपत्रार्पण के साथ महामृत्युन्जय जप, पार्थिव पूजा, षड्मुख पूजा आदि विशेष सरलरूप से लिखे हैं।

प्रयोजनीय देवार्चन पद्धति

समस्त प्रयोजनीय विधि से अलंकृत

संकलक स्व0 पं0 देवनारायण गौड़ 'दैवज्ञ'

सहयोगी पं0 विनय कुमार गौड़

दैवज्ञ मन्दिर

कानपुर द्वारा प्रकाशित

मूल्य 200/-

इस संकलन में सभी कार्य के पूजा सम्बन्धी विषयों का संकलन किया गया है, जिसमें प्रायश्चित, गणेश पूजन, कलश स्थापन, पुण्याहवाचन, मातृका पूजन, नान्दीमुख श्राद्ध, यज्ञ वास्तु पीठ पूजा, योगिनी, क्षेत्रपाल, सर्वतोभद्र, नवग्रह एवं गृह प्रवेश शिलान्यास आदि विषयों का उपयोगी संकलन किया गया है।
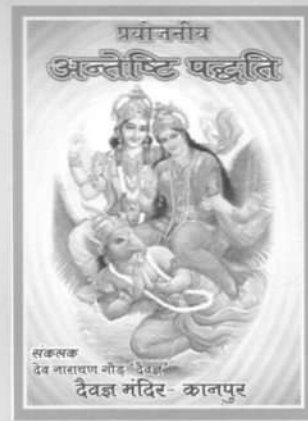
प्रयोजनीय अन्तेष्टि पद्धति

संकलक स्व0 पं0 देवनारायण गौड़ 'दैवज्ञ'

सहयोगी पं0 विनय कुमार गौड़

दैवज्ञ मन्दिर

कानपुर द्वारा प्रकाशित

मूल्य 70/-

(मलिन षोडश, मध्यम षोडश, उत्तम षोडश, नारायण बलि, पंचक शान्ति एवं सपिन्डन की विधि सहित)

संपर्क करें – 9451396245

DEVYAG MANDIR
33/164 Gaya Prasad Lane Chowk, Kanpur-208001
Contact : +91-9451396245, +91-8765190580 ;
E-mail : devyagmandir@gmail.com

SOLAR PRESS # 9839030542